सत्यमेव जयते

रक्षा लेखापरीक्षा विभाग की हिंदी पत्रिका

अभिलाषा

32वां अंक 2022

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय
महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

अभिलाषा परिवार

बैठे हुए बाएं से -

श्री पंकज वर्मा, निदेशक (लेखापरीक्षा), लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्री एस. आलोक, महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्रीमती मोना जैन, निदेशक (प्रतिवेदन) लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

दूसरी पंक्ति बाएं से -

श्रीमती प्रियंका त्यागी, उप निदेशक (मुख्यालय) लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्री सतीश कुमार, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्रीमती किरनजीत कौर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्रीमती विदुषी वत्स, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
सुश्री सोमवती, हिन्दी अधिकारी, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
श्रीमती मंजू रानी, डाटा एन्ट्री ऑपरेटर, लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अभिलाषा

2022

रक्षा लेखापरीक्षा विभाग की हिन्दी पत्रिका

32वां अंक

कार्यालय
महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''अभिलाषा'' के एक और नूतन अंक को आपके कर-कमलों में प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। संपादक मंडल एंव सभी रचनाकारों को हार्दिक आभार एंव बधाई ।

14 सितम्बर 1949 से शुरू होकर हिंदी की अपनी विकास यात्रा रही है और वर्ष 2022 तक हिंदी के प्रति जन मुखरता बढ़ी है और पहले हिंदी बोलने व राजभाषा हिंदी में काम करने की जो हिचकिचाहट होती थी, वह अब जन-मानस में नहीं है। जब हम आज़ादी का 75वां अमृत महोत्सव मना रहे हैं तो राजभाषा हिंदी के स्वतंत्रता संग्राम में पूरे देश को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बाँधने के योगदान को याद करते हैं। राजभाषा हिंदी का किसी स्थानीय भाषा से कोई मतभेद नहीं है बल्कि हिंदी में सभी भाषाओं के शब्दों को अपने में समाहित कर अपना संवर्धन करने की अद्‌भुत शक्ति है। राजभाषा हिंदी ने अपना यह मुकाम प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम व पुरस्कार की भावना से बनाया है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी अपनी अमिट छाप छोड़ रही है और संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रमुख आधिकारिक भाषा बनने हेतु हिंदी अपनी योग्यता रखती है।

पत्रिका का यह अंक आप सभी पाठकगणों को और भी रोचक व ज्ञानवर्धक लगेगा क्योंकि रक्षा लेखापरीक्षा से जुड़े सभी विभागों के कार्मिकों ने अपनी लेखनी से विविध विषयों पर अपनी रचनात्मकता को सभी पाठकगणों तक पहुंचाया है। आशा है कि राजभाषा हिंदी के प्रति आप सबका समर्पण व लगाव ऐसे ही बना रहेगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(श्री एस. आलोक)
महानिदेशक
लेखापरीक्षा रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

भारतवर्ष की राजभाषा के रुप में शोभायमान 'हिन्दी' की गरिमा को अलंकृत करती, रक्षा लेखापरीक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'अभिलाषा' के 32वें अंक के सफल प्रकाशन पर सभी सुधी पाठकों, रचनाकारों व संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

राजभाषा हिंदी ने जनसाधारण की संपर्क भाषा के रूप में सार्थक भूमिका अदा की है। हिन्दी को भारतीय सभ्यता की श्वास कहना भी समीचीन होगा। हिंदी, विविध भाषा-भाषी भारतीयों के मध्य विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन करते हुए हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में 'अभिलाषा' पत्रिका अपना अभीष्ट योगदान दे रही है। साथ ही, विभागाधीन कार्यालयों के कार्मिकों की कलात्मक एवं सृजनात्मक क्षमताओं की अभिव्यक्ति को उपयुक्त मंच प्रदान कर रही है।

पावन जलधाराओं में ज्यों, गंगा–ओ–कालिंदी है,
ज्ञान की अविरल धारा यूं ही मातृभाषा हिंदी है,
यही कामना है, हिंदी को नित–नूतन आयाम मिले,
उन्नत हो हिंदी निस–दिन, जग में सर्वोपरि नाम मिले।

शुभकामनाओं सहित।

रश्मि

(रश्मि अग्रवाल)
महानिदेशक
लेखापरीक्षा (नौसेना), नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

रक्षा लेखापरीक्षा विभाग की वार्षिक पत्रिका 'अभिलाषा' के 32वें अंक के प्रकाशन के शुभ अवसर पर मुझे अत्यन्त गर्व एवं हर्ष का अनुभव हो रहा है। मेरी तरफ से राजभाषा कार्यान्वयन में लगे राजभाषा से जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं। इस कार्यालय में प्रकाशित होने वाली हिन्दी पत्रिका 'अभिलाषा' हम सब अधिकारियों/कर्मचारियों की रचनात्मक एवं सांस्कृतिक प्रतिभा का अनूठा प्रतिबिम्ब है।

इस पत्रिका के माध्यम से इस विभाग के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को अपने अंदर की लेखन प्रतिभा के माध्यम से अपने भावों को उजागर करने का अवसर तो मिलता ही है, साथ ही यह हिन्दी भाषा की उन्नति में सहयोग का अवसर भी प्रदान करती है। हमारे विभाग के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का कर्तव्य बनता है कि वे अपने कार्यालयीन दायित्वों के पालन के साथ-साथ हिन्दी भाषा की उन्नति का माध्यम भी बनें। 'अभिलाषा' पत्रिका का प्रकाशन आप सब के सहयोग से ही संभव हो पाया है जिसके लिए आप सब बधाई के पात्र हैं।

मेरी तरफ से आप सभी को एक बार फिर से इस शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं।

(शरत चतुर्वेदी)
महानिदेशक
लेखापरीक्षा (आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

सत्यमेव जयते

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली अपनी पत्रिका 'अभिलाषा' के 32वें अंक को प्रकाशित करने जा रहा है। पत्रिका का निरंतर प्रकाशित होना ही कार्यालय की राजभाषा अनुप्रयोगों के प्रति प्रतिबद्धता को चिन्हित करता है। रक्षा लेखापरीक्षा से संबंधित विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त श्रेष्ठ एवं रोचक कृतियों से सुसज्जित यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार को बढ़ावा देती है बल्कि यह रक्षा लेखापरीक्षा विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों के उत्साह में वृद्धि भी करती है जिससे अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रेरणा मिलती है।

मैं इस पत्रिका के 32वें अंक के प्रकाशन को सफल बनाने में सहयोगी विविध रचनाकारों तथा पत्रिका के प्रकाशन कार्य में संलग्न संपादक मंडल को हृदय से बधाई देता हूँ, जिनके प्रयासों से इस पत्रिका का प्रकाशन निर्बाध रूप से संपन्न हो पाया। साथ ही, मैं आशा करता हूँ कि हमारी इस पत्रिका को साहित्य की दृष्टि से सृजनशील एवं राजभाषा हिंदी के उत्थान के लिए एक सर्वोत्तम साधन के रूप में प्रसारित किया जाता रहेगा।

(संदीप लाल)
महानिदेशक
लेखापरीक्षा (वायुसेना), नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

पत्रिका के 32वें अंक के सफल विमोचन के लिए बधाईयाँ। यह एक सराहनीय प्रयास है जिसके माध्यम से हमारे सहयोगियों ने हिंदी के क्षेत्र में न सिर्फ अपने कौशल की अभूतपूर्व प्रतिभा का प्रदर्शन किया है बल्कि हिंदी भाषा की लोकप्रियता के लिए प्रभावपूर्ण प्रयासों में अहम भूमिका निभाई है।

हिंदी पत्रिका 'अभिलाषा' राजभाषा की उन्नति एवं प्रचार-प्रसार की दिशा में किया गया एक अत्यंत प्रशंसनीय प्रयास है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक अभिनंदन । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(प्रीति अब्राहम)
प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं), पुणे

सत्यमेव जयते

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि रक्षा लेखापरीक्षा विभाग की हिंदी पत्रिका 'अभिलाषा' के 32वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भाषा देश की सभ्यता और संस्कृति की वाहक होती है। इस दायित्व का हिंदी भाषा ने सफलतापूर्वक निर्वाह किया है। राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक विभिन्नताओं को एकता के सूत्र में पिरोती है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन तथा राजभाषा के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दिशा में 'अभिलाषा' के 32वें अंक का प्रकाशन उल्लेखनीय कदम है। यह पत्रिका रक्षा लेखापरीक्षा विभाग के सभी कार्यालयों में भाषाई सौहार्दता का प्रचार-प्रसार करते हुए राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को सुनिश्चित करने में भी सहायक सिद्ध हो रही है।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिये मेरी शुभकामनाएं।

(वी एस. वेंकटनाथन)
प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं), चंडीगढ़

सत्यमेव जयते

संदेश

गृह पत्रिका 'अभिलाषा' का 32वें अंक सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के अभियान का महत्वपूर्ण अंश है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय का दर्पण है, जिसके द्वारा हम पाठकों को इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरुचि के साथ-साथ अन्य कार्यालयों की गतिविधियों से भी अवगत करवाते हैं। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। मैं सभी रचनाकारों को इस पत्रिका में उनके रचनात्मक योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। भिन्न-भिन्न प्रकार की रचनाओं से ओत-प्रोत यह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उत्कृष्ट लेखन कला का प्रमाण है।

मैं आशा करती हूँ कि प्रस्तुत अंक राजभाषा के प्रति जागरुकता का वातावरण बनाने में मददगार साबित होगा। पत्रिका के सफल संपादन और आकर्षक डिज़ाईन आदि के लिए संपादक मंडल और प्रकाशक बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका 'अभिलाषा' की निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

मोना

(मोना जैन)
निदेशक (प्रतिवेदन)
लेखापरीक्षा रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

पत्रिका का नियमित प्रकाशन अपने आप में इस बात का साक्ष्य है कि आप सभी की हिन्दी भाषा के प्रति गहरी निष्ठा है जो अनुकरणीय है। कहा जाता है कि ''उत्साह प्रयास की जननी है तथा इसके बिना आज तक कोई महान उपलब्धि हासिल नहीं की गई है'', इसलिए हमें भी अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्साह को बनाए रखना है तथा लक्ष्यों के प्रति निरंतर प्रयासरत रहना है, फिर उपलब्धियों को हासिल करने से हमें कोई भी नहीं रोक पाएगा।

पत्रिका की सामग्री अत्यंत समीचीन और प्रकाशन सुंदर व सुरुचिपूर्ण है। पत्रिका की सभी रचनाएँ प्रभावशाली, रोचक एवं उच्चकोटि की हैं जिसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत सराहनीय प्रयास है जिसकी निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए पत्रिका समूह के संपादक एवं प्रकाशन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई। हमें संकल्प लेना होगा कि हम सभी सरकारी कामकाज हिन्दी में करने में अपना गौरव समझेंगे और हिन्दी का प्रयोग न केवल निधारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करेंगे बल्कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे।

(किरनजीत कौर)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग
लेखापरीक्षा रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संपादकीय

भाषा, किसी भी राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की संवाहिका होती है और भाषायी एकता से ही राष्ट्र की अखण्डता सुदृढ़ होती है। कोई भी देश स्वभाषा के बिना अपने राष्ट्रीय व्यक्तित्व को मौलिक रूप से परिभाषित नहीं कर सकता।

पुरातन काल से 'हिन्दी' हमारे राष्ट्रीय व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती आ रही है और आज वह भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ-साथ भारत के संविधान में वर्णित भावनात्मक एकता को मजबूत करने का भी माध्यम है। हिंदी ने भारतीय संस्कृति से संविधान निर्माण प्रक्रिया तक और पुरातन युग से स्मार्ट फोन के प्रयोग तक का लंबा सफर तय करते हुए हमारी सामासिकता को अक्षुण्ण रखने में महती भूमिका निभाई है और देशवासियों में अनेकता में एकता की भावना को भी पुष्ट किया है।

'गौतम बुद्ध' ने कहा था कि ''जो आप अच्छी तरह से जानते हैं उसके प्रति ईमानदार न होना ही जीवन की एकमात्र विफलता है।'' राजभाषा हिन्दी को आप और हम अच्छी तरह से जानते हैं और इसके प्रति हमारी ईमानदारी इसमें है कि कार्यालयीन कार्यों में इसकी शत-प्रतिशत उपयोगिता के साथ-साथ अन्य कार्यों में भी इसको पूर्णता से अपनाएं तथा इसका प्रचार-प्रसार भी करें।

यदि गहराई से आँकलन किया जाए तो निश्चित ही आप भी यह मानेंगे कि यदि हमारी ज़िन्दगी से हिन्दी भाषा को निकाल दिया जाए तो हम अस्तित्वहीन हो जाएंगे। हिन्दी से ही हमारी पहचान है, हमारी अभिव्यक्ति है ये। इसके द्वारा ही हम अपने आपको एक सही जगह पर स्थापित कर पाते हैं। जैसा कि गृहमंत्री जी ने भी कहा था: ''हिन्दी को केवल एक भाषा न समझा जाए, यह हिन्दुस्तान की संस्कृति है और हर हिन्दुस्तानी का कर्त्तव्य है कि वह अपनी संस्कृति को खुद में समाहित तो करे ही, उसका अधिक प्रचार-प्रसार भी करे।''

विभागीय हिन्दी पत्रिका के 32वें अंक का प्रकाशन भी आप सभी की सक्रिय सहभागिता से संभव हो सका। भविष्य में भी इस पत्रिका के साथ रचनाओं/समीक्षाओं के द्वारा अपना रिश्ता इसी तरह बनाए रखिएगा।

विदुषी वत्स

(विदुषी वत्स)
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
लेखापरीक्षा रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, सरकारी कागज़ात, संविदा, करार, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा पत्र, निविदा सूचनाएँ और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में, अंग्रेजी और हिंदी दोनों जारी किए जाएं।

कार्यालय में मूल पत्राचार हिंदी में ही किया जाए।

हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर केवल हिंदी में दिए जाएं।

केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारियों एवं आशुलिपिकों को हिंदी टाइपिंग प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए।

कार्यालय में प्रतिदिन किए जाने वाले कार्यों में हिंदी टिप्पणी लेखन को प्रोत्साहित किया जाए।

कार्यालय के सभी कंप्यूटरों पर हिंदी के प्रयोग के लिए केवल यूनिकोड एनकोडिंग का प्रयोग किया जाए।

अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को केन्द्रीय अनुवाद प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए।

कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को अधिक बढ़ावा देने के दिए सरकारी कामकाज में हिंदी को अधिक से अधिक प्रयोग किया जाए।

संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार होते हैं एवं विचारों/लेखन की मौलिकता संबंधी ज़िम्मेदारी स्वयं रचनाकार की है।

अनुक्रमणिका

क्र. स.	विषय	रचनाकार	पृष्ठ
1.	संदेश		2-9
2.	संपादकीय		10
3.	राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश		11
4.	हिन्दी भाषा का सम्मान, समय की पुकार	धीरेन्द्र शुक्ला	13
5.	गौरक्षा और भारत	संजीव	15
6.	स्वतन्त्रता पूर्व	सोमवती	18
7.	वैशाली-लोकतंत्र की जननी	बीरेश कुमार	21
8.	चिठ्ठी	सुनीता सिंह	23
9.	नैविला से उसरविला	श्रवण कुमार ठाकुर	25
10.	धैर्य-विलुप्त होता गुण	अभितेश कुमार	27
11.	लापरवाह	तृप्ता	29
12.	पटना और उसके आसपास के क्षेत्रों की सैर	ललित कुमार वर्मा	31
13.	यात्रा वृतांत (बैंगलोर पैलेस)	राजेन्द्र कुमार	34
14.	सत्यवचन और गुस्सा	बीरेश कुमार	35
15.	जीवन के अनुभव की कुछ बातें	भरतराज	38
16.	हिंदुस्तान की भाषा हिंदी	जे.पी. गणेश बाबू	39
17.	हमारा हिंदुस्तान	उर्मिला	40
18.	प्रदूषण	काशी राम	41
19.	मैं गधा	गौरव सिंह	42
20.	यही तो जीवन है	भारती प्रवीण	44
21.	पापा, वो गुजरा जमाना याद आता है।	किरन कुमारी सौंखला	45
22.	सफलता के मूल मंत्र एवं मित्र	उर्मिला	46
23.	जिम्मेदारी से मुक्ति	आकाश त्रिवेदी	47
24.	प्रातः वंदना	अमित सिंह	48
25.	महंगाई	काशी राम	49
26.	जैसा सोचोगे वैसे तुम बन जाओगे	उर्मिला	50
27.	जंगल हमें सिखाते हैं, पुनः हरे हो जाना	अनीता चुटानी	51
28.	खेल में रक्षा लेखापरीक्षा विभाग		52-53
29.	अब हमें कोई पूछता नहीं	श्रवण कुमार ठाकुर	54
30.	कोरोना	सुमन कुमार	55
31.	ये भी एक दौर है, वो भी एक दौर था	मयंक	56
32.	ज़िंदगी के मर्म में	तनवी	57
33.	संघर्ष	एस. के. श्रीवास्तव	58
34.	मैं पानी बनना चाहती हूँ.....	नर्मदा कुमारी	59
35.	पिंजरा	काशी राम	60
36.	संघर्ष की धुन	गौरव कथूरिया	61
37.	ज़िन्दगी के संघर्ष	मोना कुमारी	62
38.	संघर्ष ही जिंदगी है।	नेहा तिवारी	63
39.	अनजान सा हूँ मैं	राजकिरण	64
40.	गुरु वंदना	शिवम् शुक्ला	65
41.	"क्या यही है जीवन का लक्ष्य?"	विदुषी वत्स	66
42.	हिंदी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों की सूची: वर्ष 2021		67
43.	सेवानिवृत्त कर्मचारियों की सूची		68
44.	स्वैच्छिक सेवानिवृत्त कर्मचारियों की सूची		72
45.	सेवाकाल के दौरान मृत कर्मचारियों की सूची		73
46.	राजभाषा हिन्दी से संबंधित कोट्स		74

(हिन्दी) भाषा का सम्मान, समय की पुकार

धीरेन्द्र शुक्ला
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा रक्षा सेवाएं , प्रयागराज

हिन्दी शब्द सुनते ही न जाने कैसे-कैसे विचार मन में आने लगते हैं। न जाने कौन सा विषय लेकर बैठ गये, क्या कोई और विषय नहीं मिला ? अरे भाई अब अंग्रेज़ी का ज़माना है, अब इस गोबर गोरु भाषा हिन्दी को पूछता कौन है। अंग्रेज़ी भद्रजनों की भाषा है औऱ ये हिन्दी वही गंवारों की भाषा । इट्स द टाइम ऑफ इंग्लिश। क्यों, कुछ ऐसे विचार ही मन में आ रहे होंगे? सच कहा, मगर ज़माने के साथ-साथ हमें अपने पुराणों के बारे में भी सोचना चाहिए, उन्हें भूलना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने कुछ सोच समझकर ही हिन्दी को हमारी राष्ट्रभाषा बनाया होगा तो हमारा भी यह कर्तव्य बनता है कि हम भी उनकी भावनाओं का आदर और सम्मान करें। आज हम स्वंतत्र हैं पर अंग्रेज़ी की गुलामी की अमिट छाप आज भी हम पर है। अंग्रेज़ इस देश को जाते-जाते भी तोड़ गये औऱ अपनी अंग्रेज़ी भाषा को यहीं छोड़ गए, जिसका हम आज भी बड़े शान से पालन कर रहे हैं। यदि हम कुछ बोलें तो उसमें दो-चार शब्द अंग्रेज़ी या उर्दू के भी बोल जाते हैं और यही है अग्रेजीं की गुलामी। अच्छा हुआ जो बापू और चाचा जी इस दुनिया को छोड़कर पहले ही चले गये वरना आज उन्हें अपने इस सपनों के भारत को देखकर बहुत दुख: होता । क्या यही है हमारा भारत जिसकी संस्कृति, रीति-रिवाज़ को लोग पूजनीय समझते थे, क्या यही है वो भारत जो विश्व गुरु रहा, जिसको हमारे बापू देखा करते थे। आज हम जिस पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण कर रहे हैं, वे पश्चिमी खुद हमारी सभ्यता का अनुसरण कर रहे हैं। कितनी महान है हमारी संस्कृति किन्तु दु:ख की बात यह है कि हम स्वंय अपनी इस संस्कृति की महत्ता को भूल रहे हैं और पश्चिमी सभ्यता का आचरण ग्रहण कर रहे हैं। आज यदि हम अपने वाक्यों में अंग्रेज़ी के दो-चार शब्दों का प्रयोग कर लेते हैं तो बड़ा गर्व अनुभव करते हैं। मैं आपको अपनी कहानी सुनाता हूँ। एक बार मैनें अपने एक मित्र से शर्त लगायी यदि तुम हिन्दी में दस मिनट बोल दो तो मैं तुम्हें दस रूपये दूँगा नहीं तो तुम मुझे दस रुपये दोगे। उसने मेरे प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया और राजनीति पर बोलना प्रारम्भ कर दिया। वह बहुत अच्छा बोला, वह भी हिन्दी में। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि कम से कम मेरे पास एक ऐसा मित्र तो है जो शुद्ध हिन्दी में बोल सकता है। लगभग छ:-सात मिनट पूरे हुए थे वह जो कुछ भी बोलता, हाथ हिलाता रहता जैसे कि कोई नेता हो, मैंने उससे पूछ ही लिया कि क्यों भाई ये तुम बीच-बीच में बार-बार हाथ क्यों हिला रहे हो। उसने कहा अरे ये तो मेरा स्टाईल है। बस वह यहीं चूक गया और अंग्रेज़ी का प्रयोग कर बैठा और शर्त हार गया। किन्तु सच बताऊँ, मैं, यह शर्त जीतकर प्रसन्न नहीं हूँ यदि मैं यह शर्त हार जाता तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होती।

खैर यह एक बहुत महत्वपूर्ण विषय है। हमें इसके बारे में विचार करना होगा। सर्वेक्षण के अनुसार प्रत्येक पाँच भारतीयों में से केवल दो व्यक्ति ही शुद्ध हिन्दी बोल सकते हैं। किन्तु यह असत्य है, मैं जिस क्षेत्र में रहता हुँ, वहाँ स्वयं हिन्दी बोलते सुनते रहता हूँ। मैं तो कहता हूँ सौ में से मुश्किल से एक या दो व्यक्ति ही मिलेंगे जो शुद्ध रूप से हिन्दी बोलते है। आज हम जैसे अंग्रेज़ी का अनुसरण करते हैं, वैसे ही क्या कोई अंग्रेज़ी हमारी हिन्दी को बोलता है तो हम भी क्यों अपनी भाषा में अंग्रेज़ी या उर्दू का मिश्रण करें।

किसी भी भाषा को अशुद्ध रुप से बोलने से केवल उसी भाषा का अनादर नहीं होता बल्कि उस भाषा का भी अनादर होता है जिस भाषा में हम उसका मिश्रण करते हैं। हमें कोई अधिकार नहीं है कि हम किसी अन्य भाषा का अनादार करें और ना ही हमें करना चाहिए। हम हिन्दी भाषी हैं, हमें हिन्दी बोलते हुए शर्मीन्दगी नहीं बल्कि गर्व करना चाहिए। आप अंग्रेज़ीं बोलें किन्तु जहाँ इसकी आवश्यकता हो, आप इस भाषा को सीखें लेकिन इसे हिन्दी के साथ न मिलाएँ। आप अंग्रेज़ी उससे ही बोलें जो उसे समझ सकें वरना वही कहावत होगी "भैंस के आगे बीन बजाओ भैंस खड़ी बौराय"।

आज जगह –जगह पर हिन्दी प्रचार के लिए संगोष्ठियों व सभाएं आयोजित की जाती हैं, परन्तु वहाँ अतिथिय भाषण अंग्रेज़ी में देने से हिन्दी प्रचार के अभियान को धक्का लगता है। हमारे देश का गौरव राज्य सभा व लोकसभा, जहाँ पर देश के बड़े-बड़े नेता आदि अनेक गम्भीर समस्याओं पर विचार-विमर्श करते हैं, वहाँ अध्यक्ष महोदय अपने व्याख्यान अंग्रेज़ी में देते हैं। अब बताइए जब देश के प्रतिष्ठित लोग ही ऐसा करेंगे तो बेचारी जनता तो उनका अनुसरण करेगी ही, इसमें जनता का क्या दोष?

बहुत हो गया हिन्दी का अपमान, अब आगे और नहीं सहेंगे हम। इस अंग्रेज़ी को अपनी हिन्दी से बाहर निकाल फेंकना है हमें। पण्डित जवाहर लाल नेहरु ने कहा है "हिन्दी एक जानदार भाषा है, यह जितना फैलेगी इसे जितना अधिक लोग बोलेंगे, इसका उतना ही विकास होगा"। हाँ भाई आखिर हम हिन्दुस्तानी हैं, हम ही न हिन्दी बोलें। यह हमारी राष्ट्र भाषा है अगर किसी ने भी इसमें मिलावट की तो हमसे बर्दाश्त न होगा क्योंकि

"हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा।
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा"।।

गौरक्षा और भारत

संजीव
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

भारत को यदि एक हिन्दू राष्ट्र कहा जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। यह अलग बात है कि इससे कुछ लोगों को ठेस भी पहुँच सकती है। मेरे इन दोनों कथनों का साक्ष्य है भारत का इतिहास, विश्व के सबसे प्राचीन धर्म हिन्दुत्व की उत्पत्ति भारत से ही हुई, साथ ही समय के साथ भारत पर शासन करने वालों से प्रभावित हो कर दूसरे धर्मों का भी भारत में प्रचलन रहा। फिर भी कहीं ना कहीं अब भी भारत की अधिकांश जनसंख्या हिन्दू ही है।

हिन्दु धर्म की विशेष बात यह है कि इसमें पशु-पक्षियों, जल, वायु, अग्नि, सूर्य, धरती, वृक्ष इत्यादि प्रकृति की हर रूप मे पूजा की जाती है और सभी पशुओं में उच्च स्थान गौ-माता को प्राप्त है। एक पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र मंथन के समय देवता और दैत्यों को अन्य मूल्यवान वस्तुओं के साथ कामधेनु प्राप्त हुई, कहा जाता है कि कामधेनु को देखभर लेने मात्र से सभी कामनायें पूर्ण हो जाती थीं।

गावो विशवस्य मातर:
अर्थात गाय विश्व की माता है।
ऋग्वेद में भी गाय के पूजनीय होने का उल्लेख है।
माता रूद्रानां दुहिता वसुनां स्वासादित्यानामृतस्य नाभि:।
प्रा नु वाचं चिकितुषे जनायमागामानागामदिती वधिष्ट।।

अर्थात् प्रत्येक चेतना वाले मनुष्य को निरपराध गौमाता को नहीं मारना चाहिए क्योंकि यह रुद्रदेवों की माता, वासुदेवों की पुत्री और आदित्य देवों की बहन है। यह अमरत्व का केंद्र है।

पशुपालन मनुष्य के विकास में एक महत्वपूर्ण घटना रही है जिसके द्वारा मनुष्य ने जंगली पशुओं को पाल कर उनको मनुष्यों के साथ रहने योग्य बनाया। ऐसा भी नहीं था की मनुष्य बहुत दयालु था और उसे पशुओं की सहायता करने की इच्छा हुई, नहीं बिल्कुल नहीं। आप सब ये तो जानते ही हैं की मनुष्य अपने शुरुआती दिनों में शिकार किया करता था परंतु जब उसने खेती करना आंरभ किया तब भी पशु उसके आहार का एक हिस्सा रहे। साथ ही अब वह ये भी सीख चुका था कि गाय, भैंस, बकरियों, ऊँटों से वह दूध भी प्राप्त कर सकता है और उनकी

खाल को पहन कर मौसम से अपना बचाव भी कर सकता है।धीरे-धीरे जब मनुष्य में सभ्यता का विकास हुआ तब समाज की संरचना हुई और इस तरह मानव ने तरह-तरह के कार्य करने आरंभ कर दिए थे जैसे किसी ने कपड़े सीना शुरु किया, किसी ने बर्तन बनाना तो किसी ने पूजा-अर्चना करना।

आज हमारी जितनी भी आदतें हैं वह हजारों सालों से मनुष्य ने अपने अस्तित्व को धरती पर बनाए रखनें के लिए जो संघर्ष किये उनसे जुड़ी हुई हैं, इन्हें एक दिन में खत्म कर देना तो संभव नहीं है पंरतु आज हमारे सामने आहार के बहुत से विकल्प हैं जो हमारे पूर्वजों के पास नहीं थे। साथ ही आपका ध्यान इस बात पर भी लाना चाहूँगी कि हमारे पूर्वज मांसाहार पेट भरने के लिए खाते थे परंतु आज यह स्वाद लेने के लिए खाया जाता है।

वैसे तो यह विषय समस्त पशुओं के जीवन की रक्षक के रूप में भी जुड़ा हुआ है परतुं यदि बात गाय कि करें तो भी यह समझ लीजिए कि गाय सभी पशुओं का प्रतिनिधित्व कर रही है। जैसा कि मैंनें आंरभ में कहा था कि गाय पूजन, हिदुंओं की संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है और एक हिन्द बहुल राष्ट्र होने के बावजूद भी भारत विश्व को चौथा सबसे बड़ा बीफ (गाय भैंस का मांस) निर्यातक देश है। ऐसा नहीं है की भारत केवल निर्यातक ही है भारत के 28 में से 8 राज्यों में गौमांस पर कोई पाबंदी नहीं है। जिनमें अरुणाचल प्रदेश, असम, गोवा, केरल, तमिलनाडु, मिजोरम, मेघालय, मणिपुर, नागालैंड. त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल शामिल हैं । कारण यह है कि ये कुछ लोगों की धार्मिक संस्कृति से जुड़ा है तो कुछ लोगों की सभ्यता का हिस्सा है।

मांसाहार खाने वालों की यदि बात की जाए तो वह सबसे पहले हमारी सभ्यता का हिस्सा बना बाद में अलग अलग संस्कृतियों ने अपनी लिहाज से इसे अपनाने या छोड़ने का निर्णय लिया और समय के साथ जो संस्कृति जिस धर्म से जा कर जुड़ी मांसाहार उस धर्म से भी जुड़ गया। जहाँ तक कानून की बात है तो भारत में हर राज्य में गौमांस को लेकर अलग कानून हैं। संविधान की राज्यों की सूची के सातवीं अनुसूची की 15 वी पंक्ति राज्य सरकारों को पशुवध और पशु के बचाव के लिए विशेष अधिकार प्रदान करती है।

यह एक विडंबना ही है, कि जिस देश में गाय को पूजा जाता है वहीं उसकी स्थिति एक बधुंआ मज़दूर या शायद उससे भी गई गुज़री है। गाय को पालने वाले उसका उपयोग दूध हासिल करने के लिए ही करते हैं और इसका कोई कारण नहीं है और यह तो कुदरत का नियम है कि गाय दूध तभी देती है जब वह माँ बनी हो, इसलिए जबरदस्ती उसे बार बार गर्भवती किया जाता है, पैदा होते ही बछड़ा यदि बैल है वो उसकी किस्मत में कसाईखाना ही लिखा होता है और कहीं गलती से गाय पैदा होती है तो उसका जीवन भी अपनी माँ की ही तरह हम मनुष्यों कि निर्दयता झेलते हुए बीत जाता है। बार-बार गर्भवती होने के कारण वह जल्दी ही किसी काम की नहीं रहती तो 4-5 साल में उसे भी या तो सड़क पर छोड़ दिया जाता है या कसाईखाने भेज दिया जाता है।

धर्म के नाम पर गौरक्षा के कई आंदोलन हुए हैं, उन्हें हिदुओं का और कई धर्मों का जैसे सिख, जैन, बौद्ध का समर्थन भी प्राप्त हुआ है लेकिन कोई कानून नहीं बन सका । दरअसल कमी कानून से ज्यादा हमारे अंदर है, देश में गौशालाओ की कमी नहीं है। यदि सच में हम गौमाता को बचाना चाहते हैं तो बदलाव कानून में नहीं खुद में लाने होगें। क्या हम ये बलिदान दे सकेंगे? दूध, दही, पनीर या इनसे बनी किसी भी वस्तु का सेवन करने का अर्थ है कि इसके लिए एक गाय ने बहुत दर्द झेला है। हमें सड़क पर घूमती इन बेघर गायों के लिए नहीं बल्कि अभ्यारण्य बनाने

की जरुरत है क्योंकि एक खूँटे से बंधा जीवन चाहे कितना ही सुखमय लगे होता तो वह कारागार के समान ही है।

मनुष्य एक ऐसा जीव है जिसने पृथ्वी को अपने एकाधिकार में ले लिया है जबकि इस धरती पर जितना हक मनुष्य का है उतना ही किसी अन्य जीव का। पशुओं को पालतू हमने अपने स्वार्थ के लिए बनाया था। अब जब वह अपना असली जीवन जो कि जंगलों में मुक्त रह कर होना चाहिए था जीना भूल चुके हैं। यह पूर्णतया हमारी ही जिम्मेदारी है कि इस गलती को सुधारें। माना कि कुछ सभ्यताओं में गौमांस का सेवन आम है किन्तु क्या हम ऐसे ही इतने बड़े गौमांस निर्यातक बन गए? भले ही पूरे तरीके से हम अपनी खान-पान कि आदतें जिनमें घी, दूध, दही और पनीर का सेवन भी शामिल है बदल नहीं सकते पर कम तो कर ही सकते हैं। साथ ही जिन गायों को सड़क पर मरने के लिए छोड़ दिया जाता है उनके लिए तो कुछ कर ही सकते हैं।

निष्कर्ष:- सरकार और जनता यदि मिलकर कार्य करें तो इस समस्या का हल भी निकाला जा सकता है। सरकार को चाहिए कि वह पशुओं के लिए नीति बनाते समय ऐसी संस्थाओं से राय लें जो कि पहले से ही इस विषय में कार्यरत हों। साथ ही मेरी निजी राय में हमें ऐसे पशुओं के लिए अभ्यारण्य खोलने की जरुरत है, जहाँ वह बिना परेशानी के विचार सकें।

स्वतन्त्रता पूर्व

सुश्री सोमवती
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

आजादी से पूर्व राजभाषा हिंदी की अपनी विकास यात्रा रही है। यद्यपि भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है किन्तु बहुत लम्बे काल से हिन्दी या उसका कोई स्वरुप इसके बहुत बडे भाग पर सम्पर्क भाषा के रुप में प्रयुक्त होता था। भक्तिकाल में उतर से दक्षिण तक, पूरब से पश्चिम तक अनेक सन्तों ने हिन्दी में अपनी रचनाएँ की। स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता ने महान भूमिका अदा की। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, सुब्रह्मण्य भारती आदि अनेकानेक लोगों ने हिन्दी को राष्टभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने का सपना देखा था। महात्मा गांधी ने 1917 में भरुच में गुजरात शैक्षिक सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में राष्ट्रभाषा की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा था कि भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रुप में अपनाया जा सकता है क्योकिं यह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती है; यह समस्त भारत में आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक सम्पर्क माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा इसे सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने 'राजभाषा' के निम्नलिखित लक्षण बताए थे-

(1) प्रयोग करने वालों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।

(2) उस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार हो सकना चाहिए।

(3) यह जरुरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हों।

(4) राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए।

(5) उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्प स्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए।

भारत के सन्दर्भ में, इन लक्षणों पर हिन्दी भाषा बिल्कुल खरी उतरती है। सितम्बर की शाम को संविधान सभा में हुई बहस के समापन के बाद जब सविंधान का भाषा सम्बन्धी तत्कालीन भाग 14 क और वर्तमान भाग 17, सविंधान का भाग बन गया तब डा. राजेन्द्र प्रसाद ने अपने भाषण में बधाई के कुछ शब्द कहे। उन्होंने कहा, "आज पहली ही बार ऐसा संविधान बना है जब कि हमने अपने संविधान में एक भाषा रखी हैं, जो संघ के प्रशासन की भाषा होगी। इस अपूर्व अध्याय का देश के निर्माण पर बहुत प्रभाव पड़ेगा"। उन्होंने इस बात पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की कि संविधान सभा ने अत्यधिक बहुमत से भाषा-विषयक प्रावधानों को स्वीकार किया। अपने वक्तव्य के उपसहांर में उन्होंने जो कहा वह अविस्मरणीय है। उन्होने कहा, यह मानसिक दशा का

भी प्रश्न है जिसका हमारे समस्त जीवन पर प्रभाव पड़ेगा। हम केन्द्र में जिस भाषा का प्रयोग करेंगे उससे हम एक-दूसरे के निकटतर आते जाएँगे। आखिर अग्रेंजी से हम निकटतर आए हैं, क्योंकि वह एक भाषा थी। अब उस अंग्रेजी के स्थान पर हमने एक भारतीय भाषा को अपनाया है। इससे अवश्यमेव हमारे संबंध घनिष्ठतर होंगे, विशेषत: इसलिए कि हमारी परम्पराएँ एक ही है, हमारी संस्कृति एक ही है और हमारी सभ्यता में सब बातें एक ही हैं। अतएव यदि हम इस सूत्र को स्वीकार नहीं करते तो परिणाम यह होता कि या तो इस देश मे बहुत-सी भाषाओं का प्रयोग होता ये प्रांत पृथक हो जाते थे जो बाध्य होकर किसी भाषा विशेष को स्वीकार करना चाहते थे। हमने यथासम्भव बुद्धिमानी का कार्य किया है और मुझे हर्ष है, मुझे आशा है कि भावी संतति इसके लिए हमारी सराहना करेगी।

18 वी शताब्दी: भरतपुर राज्य तथा पूर्वी राजस्थान के कई रजवाडे हिन्दी (ब्रजभाषा) में कार्य कर रहे थे।

1826 : हिन्दी के पहले समाचारपत्र उदन्त मार्तण्ड का कलकता से प्रकाशन, पण्डित युगलकिशोर शुक्ल द्वारा

1829: राजा राममोहन राय द्वारा 'बंगदूत' का प्रकाशन ; यह हिन्दी सहित बांगला, फारसी और अंग्रेजी में छपता था।

1835: बिहार में हिन्दी आन्दोलन शुरु हुआ था। इस अनवरत प्रयास के फलस्वरुप सन, 1875 में बिहार में कचहरियों और स्कूलों में हिन्दी प्रतिष्ठत हुई।

1872: आर्य समाज के संस्थापक महार्षि दंयानद सरस्वती जी कलकता में केशवचन्द्र सेन से मिले तो उन्होनें स्वामी जी को यह सलाह दे डाली कि आप संस्कृत छोड़कर हिन्दी बोलना आरम्भ कर दें तो भारत का असीम कल्याण हो। तभी से स्वामी जी के व्याख्यानों की भाषा हिन्दी हो गयी और शायद इसी कारण स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश की भाषा भी हिन्दी ही रखी।

1873: महेन्द्र भट्टाचार्य द्वारा हिन्दी में पदार्थ विज्ञान की रचना।

1875: बिहार में कचहरियों और स्कूलों में हिन्दी प्रतिष्ठित हुई।

1875: सत्यार्थ प्रकाश की रचना। यह आर्यासमाज का आधार ग्रन्थ है और इसकी भाषा हिन्दी है।

1877: श्रद्धाराम फिल्लौरी ने भाग्यवती नामक हिन्दी उपन्यास की रचना की।

1878: भारतमित्र नामक हिन्दी समाचार पत्र का कोलकता से प्रकाशन। इसे कचहरियों में हिन्दी प्रवेश आन्दोलन का मुखपत्र कहा जाता है।

1882: भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने शिक्षा आयोग (हन्टर कमीशन) के समक्ष अपनी गवाही दी जिसमें हिन्दी को न्यायालयों की भाषा बनाने की महत्ता पर बल दिया।

1880 का दशक: गुजराती के महान कवि श्री नर्मद (1833-86) ने हिन्दी को राष्टभाषा बनाने का विचार रखा।

1893: काशी नागरीप्रचारणी सभा की स्थापना।

1898: मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में 17 सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने पश्चिमोत्तर प्रदेश व अवध के गवर्नर सर एंटोनी मैकडोनेल को 'कोर्ट कैरेक्टर एण्ड प्राइमरी एजुकेशन इन नार्थ वेस्टर्न प्रोविन्सेज' नामक ज्ञापन सौंपा।

जनवरी, 1990: सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ (इण्डियन प्रेस, प्रयागराज से)

18 अप्रैल 1900: पश्चिमोत्तर प्रान्त और अवध के लेफ्टीनेण्ट गर्वनर एण्टोनी मैकडानेल 'बोर्ड आँफ रिवेन्यु' और हाई कोर्ट तथा 'जुडिशियल कमिश्नर अवध' से अवधि लेकर आज्ञापत्र जारी कर दिया। नागरी प्रचारिणी सभा और महामना के नेतृत्व में चले इस आन्दोलन ने पश्चिमोत्तर प्रान्त में कचहरियों और प्राइमरी स्कूलों में हिन्दी भाषा के लिए द्वारा खोल दिया।

1907: न्यायमूर्ति शारदाचरण मित्र द्वारा 'एक लिपि विस्तार परिषद्' की स्थापना एंव देवनागरी लिपि में 'देवनागर' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन।

1917: महात्मा गांधी ने 1917 में भरुच में गुजरात शैक्षिक सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में राष्ट्रभाषा की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा था कि भारतीय भाषाओं में केवल हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रुप में अपनाया जा सकता है।

1918: मराठी भाषी लोकमान्य बालंगगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषित किया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी।

1918: इंदौर में सम्पन्न आठवें हिन्दी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए महात्मा गांधी ने कहा था- मेरा यह मत है कि हिन्दी को ही हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा बनने का गौरव प्रदान करें। हिन्दी सब समझते हैं।

इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपना कर्तव्यपालन करना चाहिए।

1918: महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना।

1929: हिन्दी शब्दसागर का प्रकाशन

1930: इस वर्ष कांग्रेस अधिवेशन में आयोजित राष्ट्रभाषा सम्मेलन में स्वीकार किया गया कि देश का अन्तरप्रांतीय कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही होना उचित एंव हितकारी है।

1930 का दशक हिन्दी टाइपराइटर का विकास (शैलेन्द्र मेहता)

1935: मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री के रुप में सी0 राजगोपालाचारी ने हिन्दी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया।

इसमें से कुछ जानकारी मैंने विकिपीडिया से ली है और त्रुटिहीन रखने की कोशिश की है। इसको रखने का मेरा उदेश्य सिर्फ यही है की हम सब हिन्दी-प्रेमियों को पता चले की हमारी राजभाषा हिंदी का कितना लम्बा सफर रहा है और इस यात्रा में कितने पड़ाव रहे हैं और कितनी ही अज्ञात महान विभूतियों का राजभाषा हिंदी को इस मुकाम तक पहुँचाने में अविस्मरणीय योगदान है।

वैशाली–लोकतंत्र की जननी

बीरेश कुमार
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

लोकतंत्र की जननी, गणतन्त्र की आदि भूमि, भगवान महावीर की जन्म भूमि, गौतम बुद्ध की कर्म भूमि एवं मशहूर राजनर्तकी और नगरवधू आम्रपाली की रंग भूमि के नाम से प्रसिद्ध वैशाली, बिहार राज्य का एक ज़िला है जो बिहार की राजधानी पटना (पाटलीपुत्र) के पास स्थित है। वैशाली का इतिहास बौद्ध और जैन धर्मों के इतिहास से भी पुराना है। इसका नामकरण महाभारत काल के इक्ष्वाकु वंशीय राजा विशाल के नाम पर हुआ है। इस पावन नगरी का महिमा-मंडन करते हुए राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने कहा था-

वैशाली जन की प्रतिपालक, गुण का आदि विधाता।
जिसे पूजता विश्व आज उस प्रजातंत्र की माता।।
रुको एक क्षण पथिक, इस मिट्टी पर शीश नवाओ।
राज सिद्धियों की समाधि पर फूल चढ़ाते जाओ।।

ईसा पूर्व सातवीं सदी के उत्तरी और मध्य भारत में विकसित हुए 16 महाजनपदों में वैशाली का स्थान मगध के समान अति महत्वपूर्ण था। नेपाल की तराई से लेकर गंगा के बीच फैली भूमि पर वज्जियों तथा लिच्छवियों के संघ (अष्टकुल) द्वारा गणतांत्रिक शासन व्यवस्था की शुरूआत की गयी थी। लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व में यहाँ का शासन जनता के प्रतिनिधियों द्वारा चुना जाने लगा और गणतंत्र की स्थापना हुई। विश्व को सर्वप्रथम गणतंत्र का ज्ञान करानेवाला स्थान वैशाली ही है। आज वैश्विक स्तर पर जिस लोकशाही को अपनाया जा रहा है, वह यहाँ के लिच्छवी शासकों की ही देन है।

भगवान बुद्ध का जन्म तो नेपाल के लुम्बिनी मे हुआ था। लेकिन उनका लगाव वैशाली से था। ऐसा कहा जाता है कि बुद्ध ने तीन बार इस जगह का दौरा किया था और यहाँ काफी समय बिताया था जिस कारण वैशाली को उनकी कर्मभूमि भी कहा जाता है। बुद्ध ने वैशाली में ही अपना आखिरी प्रवचन दिया था और कुशीनगर में महापरिनिर्वाण की घोषणा उन्होंने वैशाली में ही की थी। सम्राट अशोक द्वारा वैशाली के समीप कोल्हुआ में भगवान बुद्ध द्वारा दिये गए अपने अंतिम सम्बोधन की याद में लाल बलुआ पत्थर से एकाश्म सिंह-स्तंभ की

स्थापना की गई थी जिसे अशोक स्तम्भ भी कहा जाता है। स्थानीय लोगों द्वारा इसे भीमसेन की लाठी भी कहा जाता है। द्वितीय बौद्ध परिषद की याद में दो बौद्ध स्तूपों का निर्माण किया गया था। पहले तथा दूसरे स्तूप में भगवान बुद्ध की अस्थियाँ मिलीं है। यह स्थान बौद्ध अनुयायियों के लिए काफी महत्वपूर्ण है।

वैशाली के निकट स्थित कुण्डलपुर जिसे कुंडग्राम के नाम से भी जाना जाता है जहाँ 599 ईसा पूर्व में जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर का जन्म इक्ष्वाकु वंश के क्षत्रिय राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के यहाँ हुआ था। भगवान महावीर की जन्मस्थली होने के कारण जैन धर्मावलम्बियों के लिए पवित्र प्रसिद्ध धर्मस्थल है।

मशहूर राजनर्तकी और नगरवधू आम्रपाली अपनी सुंदरता के लिए विश्व प्रसिद्ध थी जिस कारण वैशाली को महान भारतीय दरबारी आम्रपाली की भूमि के रुप में भी जाना जाता है जो कई लोक कथाओं के साथ-साथ बौद्ध साहित्य में भी दिखाई देती हैं। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहयान एवं हेनसांग ने अपने यात्रा-वृत्तान्तों में लगभग एकमत से आम्रपाली को सौन्दर्य की मूर्ति बताया है। वैशाली गणतन्त्र के कानून के अनुसार हजारों सुंदरियों में आम्रपाली का चुनाव कर उसे सर्वश्रेष्ठ घोषित कर जनपद कल्याणी की पदवी दी गई थी। ज्ञान प्राप्ति के पांच वर्ष पश्चात जब भगवान बुद्ध का वैशाली आगमन हुआ तब उनका स्वागत वहाँ की प्रसिद्ध राजनर्तकी आम्रपाली ने ही किया था। बाद में वह भगवान बुद्ध के प्रभाव में आकर बौद्ध भिक्षुणी बन गई थी।

अभिषेक पुष्करणी प्राचीन वैशाली गणराज्य द्वारा हजारों वर्ष पूर्व बनवाया गया पवित्र सरोवर है जिसके बारे में ऐसा माना जाता है कि वैशाली गणराज्य में जब कोई नया शासक निर्वाचित होता था तब उनका इसी पवित्र सरोवर पर अभिषेक करवाया जाता था।

विश्व शान्ति स्तूप जापान के निप्पोनजी बौद्ध समुदाय द्वारा बनवाया गया है जो अभिषेक पुष्करणी पवित्र सरोवर के पास है जिसमें गोल घुमावदार गुम्बद, अलंकृत सीढ़ियाँ एवं उनके दोनों ओर सिंह प्रतीत होते हैं। सीढ़ियों के सामने ही ध्यान मुद्रा में भगवान बुद्ध की प्रतिमा एवं शान्ति स्तूप के चारों ओर भिन्न- भिन्न मुद्राओं में बुद्ध की मूर्तियाँ दिखाई देती हैं।

राजा विशाल का गढ़ वास्तव में एक छोटा-सा टीला है जो करीब एक किलोमीटर की परिधि में फैला हुआ है। ऐसा माना जाता है यह कि एक प्राचीनतम संसद थी जो आज भी पर्यटकों को भारत के लोकतात्रिंक प्रथा की याद दिलाती है।

चूँकि वैशाली बौद्ध और जैन धर्मावलम्बियों के लिए पवित्र तीर्थस्थल है, इसलिए यहाँ हर साल लाखों पर्य-टक चीन, जापान, इन्डोनेशिया श्रीलंका, वियतनाम, भूटान, नेपाल इत्यादि देशों से आते रहते हैं।

चिट्ठी

सुनीता सिंह
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

गर्मी का मौसम था, भोर की किरणें कमरे में झांकने लगी थीं। अशोक ने अपनी मिचमिचाती आँखों से घड़ी की ओर देखा तो 6 बज रहे थे। अशोक मुँह धोकर हाथ में मोबाइल लिए अलसाए से घर के बाहर खुली जगह में आये और स्वंय के लगाए पेड़-पौधों का निरीक्षण करने लगे, तभी उनका ध्यान गया कि आज बेटे की साइकिल वहाँ नहीं है।

अशोक ने अपनी पत्नी को आवाज लगाई, सुनती हो कल अमित बाहर गया था क्या? लगता है साइकिल दोस्त के यहाँ छोड़ आया है। कितना समझाता हूं लेकिन यह है कि मानता ही नहीं, नालायक। सुमन ने कहा क्यों हमेशा कोसते रहते हैं उसे? कल से कहीं बाहर नहीं निकला है।

अरे! देखा कि इसकी साइकिल यहाँ नहीं है तो सोचा कि किसी दोस्त के घर छोड़ आया होगा, लापरवाह तो है ही, अशोक ने कहा । सुमन भी बाहर आई खोज-बीन के बाद लगा कि रात में किसी ने साइकिल को चुरा लिया है।

थोड़ी देर बाद अशोक ने पेड़-पौधों की क़टाई-छंटाई की। गमलों के पीछे सूखे पत्ते फंसे हुए थे उन्हें हटाकर साफ-सफाई कर ही रहे थे तभी उन्हे एक कागज का टुकड़ा मिला। धूल झाड़कर जैसे ही उसकी सिलवटें खोंली, धीरे से फुसफुसाते हुए बोले जाने क्या लिखा है। सुमन को आवाज लगाई सुनो मेरा चश्मा तो ले आना, लीजिए चश्मा देते हुए सुमन ने कहा। अमित भी वहाँ आ गया और उत्सुकता से देखने लगा।

अशोक उस टूटी-फूटी भाषा और लिखावट को पढ़ने के लिए अपनी नजरें उसमें गड़ाए हुए था कि सुमन चाय लेकर आ गई। दोनों बैठकर चाय पीते हुए उस पत्र को पढ़ने लगे मैं कोई चोर नहीं, बल्कि मामूली सा कारीगर हूँ, घरों में चिनाई का काम करता हूँ, परन्तु अब कोरोना के चलते काम बंद हो गया है। जैसे-तैसे एक महीना तो घर बैठकर काट लिया, परन्तु अब तकलीफें बढ़ने लगी हैं। मकान मालिक रोज किराया मांगता है, ऊपर से बिजली और पानी का बिल भी थमा दिया है। घर की माली हालत बेहद खस्ता हो गई है। पत्नी को भी कोरोना हो गया है जिसके कारण उसके भी काम बन्द हो गये हैं नहीं तो वह भी लोगों के घरों में झाड़ू बर्तन

करके कुछ रुपये कमा लेती थी। किसी तरह 15 दिन मकान मालिक के हाथ जोड़कर काट लिए, किन्तु अब समस्याऐं बढ़ने लगी हैं, काम मिलने के कोई आसार नहीं हैं।

चाय की एक चुस्की लेने के बाद अशोक आगे पढ़ने लगे, मेरे अन्य मित्र गांव को रवाना हो रहे हैं, ट्रेनें फुल जा रही हैं, ऊपर से टिकट के दो-तीन हजार भी देने पड़ रहे हैं। मैं भी अपने गांव जाना चाहता हूं, पैदल हीं चला जाता जिस तरह से अन्य बहुत से मजदूर जा रहे हैं, किन्तु मैं मजबूर हूँ। मैं समझ सकता हूँ आपके बेटे के रोज काम आती होगी यह साइकिल, शायद कोचिंग/ट्यूशन जाता होगा, पर मेरा बेटा अपाहिज है, वह चल नहीं सकता। इसलिए आपके बेटे की साइकिल चुराने की गुस्ताख़ी कर रहा हूँ। क्या करुँ? एक मजबूर पिता हूँ। यदि कभी शहर वापस लौटा तो अपना कुछ काम मुफ्त में करवा लेना मुझसे, पर अभी माफ़ कीजिए साहब।

अशोक कागज में लिखी लिखावट पढ़ते जा रहे थे, पर कंठ रुंधता जा रहा था। सुमन की आँखें भी आँसुओं से भर गई थीं। दोनों की चाय से निकलती भाप जैसे कप के अंदर ही समा गई थी।

"कोई बात नहीं जब से कोरोना ने पैर पसारे हैं मेरा बेटा ट्यूशन नहीं जाता है" सिर्फ इतना हीं बोल पाये थे अशोक। सभी की आँखों में आँसू , चारों तरफ सन्नाटा छा गया। सभी रूआँसी आँखों से एक दूसरे को देख रहे थे। मानो साइकिल चोरी होने का कोई ग़म नहीं। फ़िक्र है तो केवल इस चिट्ठी लिखने वाले मज़दूर की।

नैविला से उसरविला

श्रवण कुमार ठाकुर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

देश के सुदूर पूर्व में एक शहर था नैविला। नैविला की वैभवता की चर्चा दूर-दूर तक थी। शहर एक उन्नत वाणिज्यिक एवं सांस्कृतिक केंन्द्र था। दूर-दूर से लोग वहाँ वाणिज्य-व्यापार एंव सांस्कृतिक आनंद के लिए आते थे। शहर की आबादी करीब पचास हजार थी। लोग काफी मेहनती एवं कर्तव्यपरायण थे। शहर की साक्षरता सौ प्रतिशत थी। लोगों ने बहुत ही लगन से अपने शहर को उन्नत बनाया था। शहर कला, संस्कृति, विज्ञान तथा अन्य मानवीय विधाओं मे काफी उन्नत था। सभी विधाओं में उन्नति का प्रमुख कारण शहर की उन्नत अर्थव्यवस्था एवं वहाँ की कर्तव्यपरायण प्रजा थी। मनुष्य की असीमित इच्छा में वह शक्ति होती है जिसके बल पर, एक उन्नत सभ्यता का निर्माण संभव होता है। नैविला के लोगों की इस असीमित चाह एवं इच्छा ने शहर की वैभवता को ऊंचाई पर ला दिया था। लोग अच्छी शिक्षा, अच्छे कपड़े, अच्छे खाने, अच्छे मनोरजन के कायल थे। उनके पास धन की कमी नहीं थी, तथा वे अपने शहर में इन सभी सुविधाओं के लिए अधिक खर्च करने के लिए तत्पर रहते थे।

अपनी वैभवता के कारण नैविला शहर हर तरह के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता था।

एक बार उस शहर में एक धर्म परायण फ़कीर साधु का आगमन हुआ। उसका नाम धर्माक्ष था। धर्माक्ष का व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक था। शहर के लोगों पर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ना शुरु हुआ। क्या बूढ़े क्या बच्चे, सभी में उनकी लोकप्रियता बढ़ती चली गई। हर वर्ग के लोग रोज अपना काम जल्दी-जल्दी निपटाकर, उनके पास आ जाते, तथा उनके पास बैठ कर उनके प्रवचनों का आनंद लेते, उनके प्रवचनों की मुख्य बातें निम्नलिखित हुआ करती थी।

1. व्यक्ति को अधिक की चाह /इच्छा त्याग देनी चाहिए।
2. व्यक्ति को अपनी आवश्यकताएँ कम कर देनी चाहिए।
3. व्यक्ति को अपना अधिकतम समय ईश्वर की भक्ति में लगाना चाहिए।
4. व्यक्ति को दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहिए।
5. व्यक्ति को मांसाहार त्याग देना चाहिए।

धीरे-धीरे लोगों पर धर्माक्ष के उपदेशों का प्रभाव पड़ने लगा । उनकी शिक्षाओं के प्रभाव ने लोगों के क्रिया-कलापों को भी प्रभावित कर दिया।

लोगों में, सर्वप्रथम, अधिक की चाह समाप्त हुई, मनुष्य की चाह ही किसी सभ्यता की वाहक होती है, चाह समाप्त होने पर हर तरह की उत्पादकता शिथिल पड़ जाती है व सभ्यता का विनाश हो जाता है। चूँकि नैविला के लोगों की चाह सीमित हो गई थी । लोगों को अब न तो अच्छे कपड़े की चाह थी, न ही अच्छे खाने की, न ही उन्हें अच्छी गाड़ियों का शौंक था और न ही अच्छे मनोरजंन के साधन की फलत:, शहर के सारे मॉल, सारे रेस्टोरेन्ट और सारे मनोरजंन पार्क एक-एक करके बंद होते चले गए, उन सभी जगहों पर कार्य करने वाले लोग बेरोजगार एवं बेकार हो गए।

लोगों ने अब कम में जीना सीख लिया था। अब उन्हें न तो अधिक पैसों के जरुरत थी न ही अच्छे रोजगार की। वह आंनद-पूर्वक ईश्वर भक्ति में लग चुके थे। धीरे-धीरे शहर के सारे कल-कारखानों ने भी दम तोड़ दिया. अब एक गुलज़ार शहर जो कभी अर्थव्यवस्था के तृतीय एवं चतुर्थ क्षेत्र में उन्नत था, मुश्किल से द्वितीय क्षेत्र को कायम रख पा रहा था.

हद तो तब हो गई, जब ईश्वर भक्ति में लगे नैविला वासियों ने चतुर्थ एवं पंचम उपदेशों का अनुपालन शुरू किया । लोगों ने अपने घरों एवं बागीचों में काम करने वाले श्रमिकों के कष्ट से आहत हो कर उन्हें उनके काम से मुक्त कर दिया, उन्हे भी भक्ति भाव में लग जाने का पाठ पढ़ाया। अब वे भी नव दीक्षित सन्यासी बन गए। व्यक्ति की चाह सीमित होने एवं श्रम शक्ति के अभाव में एक-एक कर सेवा एवं उत्पादन क्षेत्र बंद हो गए । अब कृषि तथा पशुपालन ही शहर का मुख्य व्यवसाय रह गया। अब लोग कृषि कार्य कर अन्न उपजाते जिससे उनके खाद्यान्न की पूर्ति हो जाती एवं पशुपालन से उन्हें दुग्ध-उत्पाद एवं मांस-उत्पाद मिल जाते थे, जिनको वे खा-पीकर मस्ती से भक्ति भाव में तल्लीन हो जाते थे। सेवा व उत्पादन क्षेत्र के बंद हो जाने से कृषि व पशुपालन पर अतिरिक्त दबाव आ गया था। अब तक शहर के लोग कम में जीने की कला सीख चुके थे तथा उनकी आस्था ईश्वरीय भक्ति की पराकाष्ठा में थी। उत्पादन क्षेत्र की कमी ने एक शहर की रौनकता छीन कर उन्हें एक अर्ध-शहरी क्षेत्र में ला दिया था। शहर की सड़कें अब जर्जर हो चुकी थी, मकान खंडहर में बदल चुके थे, नालियों का निशान ही अब देखने को मिल रहा था। इसी बीच, लोगों में मांसाहार त्याग देने की प्रवृति बढ़ गयी। जिसका सीधा असर अन्य शाकाहारी कृषि उत्पादों पर पड़ गया। पशुपालन में लगे लोगों का भी अब रोज़गार जाता रहा। बेरोज़गारी अपने चरम सीमा पर थी। कृषि भूमि का दोहन कई गुना बढ़ गया। कृषि भूमि के अति दोहन ने उसे धीरे-धीरे ऊसर भूमि में बदल दिया। भुखमरी भी बढ़ गयी। अब शहर बेजान व भूमि ऊसर हो गयी। शहर की बची-कुची जनसंख्या भी पलायन कर गई। शहर निर्जन हो गया। इस तरह नैविला एक उसरविला बन गया।

धैर्य- विलुप्त होता गुण

अभितेश कुमार
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय निदेशक, लेखापरीक्षा
(नौसेना) विशाखापट्टणम

'धैर्य' मतलब परिणाम की प्रतीक्षा की बेला। अगर धैर्य रखा जाए तो कभी कभी ऐसे कार्य भी सकारात्मक परिणाम दे देते हैं जिनकी हमने कल्पना भी नहीं की होती। धैर्य एक ऐसा गुण है जिसकी मदद से मनुष्य एक शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकता है। लेकिन ना तो आज वह मनुष्य रहा है और ना ही शांतिपूर्ण जीवन जैसी कोई अवधारणा। आज की इस बेलगाम भागती जिन्दगी से धैर्य उसी तरह से अदृश्य हो गया है जैसे गधे के सिर से सींग; अर्थात् ऐसा लगता है कि भगवान ने यह गुण हमारी प्रजाती में गढ़ा ही नहीं है। दिन-प्रतिदिन अपने चारों तरफ घट रही घटनाओं को देखकर तो यही प्रतीत होता है।

कभी सुनने को मिलता है कि समोसे के साथ चटनी मांगने पर दुकानदार ने ग्राहक को डंड़ो से मारा, कभी वाहन द्वारा आगे निकलने का रास्ता ना दिये जाने (या ना दे पाने) के कारण पिछले वाहन वाले ने आगे चल रहे वाहन वाले को गोली मार दी।

यह गुण हममें से इस तरह से गायब हो रहा है मानो कोई बलपूर्वक इसे हमसे छीन रहा हो। अब तो एक बच्चे की मासूमियत/शैतानियत को हर सीमा तक झेल सकने वाले माता-पिता में भी इसके कम होते लक्षण देखे जा सकते हैं। अभी हाल ही में एक खबर सुनी कि एक माँ ने सिर्फ इसलिए अपनी तीन साल की बेटी की जान ले ली क्योंकि उस बच्ची ने खेल-खेल में अपने पिता का पक्ष लिया था। क्या कोई सामान्य इंसान इस बात की कल्पना भी कर सकता है?

जब भी मैं किसी रेलवे स्टेशन या बस स्टैंड पर ट्रेन या बस की प्रतीक्षा कर रहा होता हूँ तो अक्सर देखता हूँ कि लोग सरकार द्वारा प्रदत्त बैठने की सुविधा को नजर अंदाज करके रेलवे ट्रैक या सड़क के किनारे खड़े होकर बार-बार झाँक कर यह देखने की कोशिश करते रहते हैं कि ट्रेन या बस आई या नहीं। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि अगर ये लोग आराम से बैठ कर इंतजार करने लगे तो ट्रेन दूसरे प्लेटफार्म पर चली जाएगी क्या? या अगर इन्होंने एक किलोमीटर दूर से आती हुई ट्रेन देख ली तो भागकर प्लेटफ़ॉर्म से उतरकर ट्रेन की तरफ भागकर उसमें चढ़ जायेंगे?

धैर्य संरचना में बिल्कुल निवेश जैसा है:- लघु अवधि के लिये तथा दीर्घ अवधि के लिये। जिस तरह अल्प लाभ के लिये लघु तथा अधिक लाभ के लिये दीर्घ अवधि का निवेश होता है बिल्कुल उसी तरह हमें छोटे छोटे कार्यो के

परिणाम के लिए कम तथा बड़े कार्यो के लिये अधिक धैर्य की आवश्यकता होती है। बड़े कार्यों का एक उदाहरण है जिंदगी। हालांकि जिंदगी अगर सही से और धैर्य पूर्वक जी जाए तो उससे छोटा कुछ भी नहीं। किंतु आज मनुष्य द्वारा जिंदगी जी ही नहीं जा रही अपितु ऐसा प्रतीत होता है कि जीनी पड़ रही है। इसलिये यह लम्बी हो गयी है, अत: इसको खुशहाल बनाने के लिये हम जो दिन-रात घड़ी की सुई की तरह घूमते रहते हैं, उसके परिणाम देखने के लिए अधिक प्रतीक्षा की आवश्यकता भी है। किंतु, जैसा कि मैनें ऊपर बताया किस तरह से धैर्य मानव—जाति से विलुप्त होने की कगार पर है और इसके कारण समय से पहले यह सोचकर कि हमें हमारे किये का परिणाम नहीं मिल रहा है, लोग हिम्मत खो देते हैं और कुछ तो इतने अधिक अवसाद से घिर जाते हैं कि आत्महत्या तक कर गुजरते हैं। अगर धैर्य रखा जाता तो शायद अनुकूल परिणाम देखने को मिल सकते थे लेकिन नहीं।

यही धैर्य हमको हमारे देश, समाज की प्रगति में जब किसी भी सरकार द्वारा कोई भी कार्य किया जाता है तो वहाँ भी दिखाना है। किसी देश की प्रगति को गति देने के लिये एक सरकार को हर स्तर पर हर तरह के फैसले लेने होते हैं, कुछ का परिणाम हमको तुरंत देखने को मिल जाता है और कुछ दीर्घावधि के लिए होते हैं। आजकल देखा जा रहा है कि लोगों को देश की भलाई से ज्यादा खुद की खुशहाली में ज्यादा रुचि है जो एक सही रास्ता नहीं है। किसी भी देश के नागरिक तभी खुश और सुरक्षित रह सकते हैं जब वह देश सुरक्षित है। लेकिन धैर्य की कमी के चलते देशहित में लिए गये फैसले, जिनका लोगों को प्रत्यक्ष लाभ नहीं मिलता, उन्हें या तो समझ नहीं आते या उन्हें कोई मतलब नहीं होता और कभी कभी तो वे उसके विरोध तक में आ खड़े होते हैं।

व्यक्तिगत स्तर पर भगवान से मेरी हमेशा यही प्रार्थना रहती है कि लोगों से धैर्य का अमूल्य उपहार ना छीनें। तथा सार्वजनिक रुप से अगर यह करना हो तो हमारी सरकारों को हमारी पुरानी शिक्षा पद्धति को फिर से अपनाना होगा। वह शिक्षा पद्धति जिससे हमारा भारत देश विश्व गुरु कहलाता था। अंत में अपने इस लेख के माध्यम से मैं यही संदेश देना चाहूँगा कि धैर्य रखें, सब कुछ मिलेगा किंतु समय आने पर।

लापरवाह

तृप्ता
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा ,
रक्षा सेवाएं , नई दिल्ली

लापरवाही तो संतुष्टि माँ के पेट से ही लेकर आई थी। जब माँ के पेट में संतुष्टि आई तो उन्हें चार महीने बाद पता चला कि वह माँ बनने वाली हैं। बड़ा भाई सात महीने का जो था, अभी उन्हें पीरियड भी नहीं आए और वो भाई को फीड कराने की वजह से उसका आना सोच भी नहीं सकीं। डॉक्टर के बताए हुए दिन के मुताबिक जब माँ उसके जन्म के लिए हॉस्पिटल जाने वाली थी, तब संतुष्टि उसके एक रात पहले ही जन्म लेने की ठान चुकी थी। बीती रात माँ को दर्द हुआ और दादी और बुआ के हाथो में संतुष्टि का जन्म हो गया था। उसी के पुराने घर के एक छोटे से कमरे में सब उसे देखकर चकित हुए थे, छोटी सी थी और जितना छोटा सा मुँह था उससे भी बड़ी नाक, बड़ी-बड़ी आँखों से सबकी तरफ देख रही थी, दादी ने पापा से कहा था, लो हो गया परिवार पूरा तुम्हारा और बुआ ने कहा था तुम्हारी नाक लेकर आई, पापा ने कहा था आखिर बेटी किसकी है ये भी तो देखो नाक तो खानदानी है हमारी।

दादी ने पापा को उसे सौपंते हुए कहा, "यही वह जगह है जहाँ तुम्हारे चचरे भाई का जन्म हुआ।

पापा तो जन्मांक विचारने बैठ गए थे, और फिर पूरी रात नामकरण होता रहा बुआ और चाचा से,

लेकिन लापरवाही तो संतुष्टि मुट्ठी में बांधकर लाई थी जो ठान लिया उसे करना और फिर उसी से उभरकर उसे वहीं छोड़ देना। माँ हमेशा कहती है, पापा वाला ज़ज्बा है, ज़ोश है, ज़िद्ध है और नाक को लेकर तो सब सुना जाते,,,,, पापा जब भी किसी बात की सराहना करते हुए कहते, मुझ पर गई है तो वह मुँह बनाकर कहती बस नाक व हँसकर कहते खानदानी है, बाबा की भी थी, ताऊजी की भी थी, मेरी भी है और अब तुम्हारी भी.....

स्कूल के टीचर तक नाक को लेकर उसे चिढ़ाते थे, एक चचेरी भाभी तो हमेशा कहती है नाक पर जैसे इंजेक्शन ही लग जाता है गुस्से में, और बड़ी हो जाती है लेकिन सच कहूँ तो उसे नाक को लेकर कभी बुरा नहीं लगा, कभी पछतावा नहीं हुआ, कभी भद्दा नहीं लगा...।

क्योंकि कभी उसे नाक बड़ी होना कमी नहीं लगा, लेकिन लापरवाही सबसे बड़ी कमी थी उसकी, इतनी बड़ी कि उसे सुधार नहीं सकती थी, God Gifted थी वो उसके लिए.....

संतुष्टि हर ज़रुरी काम करती और अंत में उसे पूरा किए बिना ही छोड़ देती ..... सच कहूँ तो उसने अपनी पूरी स्टडी लाईफ में एक प्रैक्टिकल कभी वक्त पर नहीं दिया, मगर फिर अंत में कोई न कोई चांस मिल ही जाता है, उसने फॉर्म डालने तक उसकी कीमत समझी मगर फिर बाद में परीक्षा तिथि आने पर उसकी अहमियत ही गिर जाती।

किसी बड़े गिफ्ट, इसांन, जगह से मिलने तक उसके मायने संतुष्टि की नजरों में रहे और मिलने के बाद वो पलट कर कभी उसकी तरफ नहीं देखती.... शादी जैसे बड़े फैसले भी उसने ऐसे लिए जैसे किसी पर्यटक स्थल पर जाना हो।

उसने किसी कीमती कपड़ों और गहनों को भी बहुत सहेज कर नहीं रखा, उसकी माँ उसे कई बार कपड़ों की लापरवाही और बिगड़ी वार्डरोब की वजह से उसे कूट भी देती... उसे आज भी कहीं पर ताला लगाना पसंद नहीं है, जिसकी वजह से उसे कई बार अपनों से सुनना भी पड़ता है।

उसकी लापरवाही से उसके कुछ अपने खुश भी रहते हैं, और कुछ दुखी भी, कुछ उसे बेपरवाह समझ अपने दिल के करीब रखते हैं और कुछ को लगता है कि वह ज़्यादा चालाक है, इस तरह वो मासूम बन अपनों के साथ खेल खेलने वाली है।

संतुष्टि, मैं लापरवाह हूँ..... इतनी कि मुझे न तो ससुराल बंधन लगा और न मायका दूरी, उसे न पति आदत लगे और न सास–ससुर पराये, वो न कभी पापा की परी बनी और न माँ के लिए दुनिया की सबसे अच्छी बेटी..... मुझे सब अपने लगे। वह जिससे जुड़ी बस जुड़ गई.... हाँ कभी ज़ाहिर नहीं किया कि वो उसके लिए क्या हैं, मैं उसकी जिंदगी उनके न होने से कितनी अधूरी और दर्दभरी है.... वही उनके लिए चिल्लाकर रो नहीं पाई, वह उनकी अनुपस्थिति पर तमाशा नहीं कर सकी..... उसकी लापरवाही इतनी कि वह दर्द को अपने अंदर दबा कर, मुस्कुराकर खड़ी हुई , मुस्कुराकर अपनों से मिली कि कहीं उसका उदास चेहरा अपनों की मुस्कुराहट को न मार दे।

लेकिन उसकी लापरवाही कभी भी उसकी विस्मृति नहीं थी, उसे सब याद रहता तब भी जब वह बहुत जरूरी काम करती, उसके दिमाग का एक एंकात कोना उसे वह सब याद दिलाता है जिसे सभी उसकी लापरवाही कहते हैं। जब वह अपने दोस्तों, परिवार, बच्चों के सगं हँस रही होती है, तब उसे उसके अंदर उसके अपनों की कमी खल रही होती है, जब वह बेशकीमती वस्तुओं को यूँ ही छोड़ देती है तब भी उसे पता होता है कि कौन हानि पहुचाँ सकता है और कौन उनसे मतलब नहीं रखता .....

संतुष्टि मैं लापरवाह हूँ.....

एक दिन किसी ने कहा था तुम देखना तुम्हें एक दिन आदत हो जाएगी कि तुम एक दिन भी एकेडमी न आना मिस करोगी..... परंतु उसने कहा था, आदतें जिंदगी की सबसे बड़ी लापरवाही हैं, और मुझे लापरवाहियों से नफरत है,

मुझे आदतों से नफरत है..... मुमकिन हो तो आदत मत डालना, तुम लापरवाह हो जाओगे।
माँ कहती हैं, तुम लापरवाह हो... कभी फोन नहीं करती वक्त पर,
पापा कहते हैं, तुम लापरवाह हो.... वक्त का ख्याल ही नहीं तुम्हें।
पति कहते हैं, तुम लापरवाह हो..... तुम्हें जेवर और पैसे सभालनें नहीं आते,
सास-ससुर कहते हैं, तुम लापरवाह हो..... तुम्हें अब अपने निजी घर के बारे में सोचना चाहिए
संतुष्टि ने कहा "परवाह आदत होती है,
जिसे छोड़ हमें एक-दिन जाना होता है लापरवाही से.....
तो मैं लापरवाह ही अच्छी हूँ.
तुम सब परवाह लेकर कहाँ जाओगे???????????

पटना और उसके आसपास के क्षेत्रों की सैर

ललित कुमार वर्मा
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी,
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएँ, दिल्ली छावनी

गंगा किनारे स्थित पटना एक प्राचीन शहर है। माना जाता है कि मगध के राजा ने 490 बी. सी. में पटना की स्थापना की थी। पटना में कई दर्शनीय स्थल हैं जो न केवल पौराणिक एंव ऐतिहासिक दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखते हैं अपितु आध्यात्म व धार्मिक दृष्टि से भी विश्व में प्रमुख स्थान रखते हैं। यही कारण है कि पटना और उसके आसपास के क्षेत्रों में प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में श्रद्धालु देश-विदेश से पहुँचते हैं व ज्ञान प्राप्ति की सदियों से चली आ रही परंपरा व विरासत को जीवित रखते हैं।

पटना रेलवे स्टेशन से लगभग 10 किमी. की दूरी पर है कुम्राहार, जहाँ प्राचीन पाटलीपुत्र यानि चन्द्रगुप्त मौर्य काल के राजप्रासाद के अवशेष उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। इतिहासकारों के अनुंसार कुम्रहार प्राचीन पाटलीपुत्र का प्रमुख स्थल है। 5 वीं शताब्दी ई. पू. के मध्य अजातशत्रु के पुत्र उदयन ने मगध की राजधानी राजगृह से स्थानान्तरित कर पाटलीपुत्र में बसाया था। इसके उपरांत लगभग एक हज़ार वर्ष तक शिशुनाग, नन्द, मौर्य, शुंग एंव गुप्त इत्यादि वंशों के शासनकाल में पाटलीपुत्र ही मगध साम्राज्य की राजधानी रही। लगभग 300 ई. पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में यूनानी राजपूत मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक इंडिका में पाटलीपुत्र के बारे में विस्तार से लिखा है व काष्ठनिर्मित राजभवन का उल्लेख किया है। कुम्रहार में मौर्यकाल सभागार के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। यहाँ चौथी-पाँचवी सदी ई. पू. में बना आरोग्य विहार के अवशेष आज भी मौजूद हैं। यहाँ से तांबे के सिक्के, आभूषण, हाथी दांत व मिट्टी से निर्मित पासे, मृणमय मुद्राएँ व एक मृदभाण्ड का टुकड़ा भी उत्खनन में प्राप्त हुए हैं।

पटना में गाँधी मैदान के पास पश्चिम में स्थित गोलघर भी दर्शनीय स्थल है। इसका निर्माण अनाज के भण्डारण के लिए किया गया था। इसका निर्माण बिना स्तम्भ के किया गया है और इसका आधार 125 किमी व ऊचाँई लगभग 29 मीटर है। इसमें लगभग 37,000 टन अनाज रखा जा सकता था। यहाँ हर रोज शाम को लेजर शो का भी आयोजन होता है, जिसमें बिहार के गौरवशाली इतिहास, भगवान बुद्ध, चाणक्य, चन्द्रगुप्त व गुप्तकाल से जुड़ी बातें दर्शायी जाती हैं। इसकी प्रसिद्धता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रतिदिन सैकड़ों पर्यटक देश-विदेश से यहाँ पहुँचते हैं।

पटना रेलवे स्टेशन के आगे कुम्हरार से कुछ ही दूरी पर अगम कुआँ है। माना जाता है कि इस कुएं की खुदाई मौर्य सम्राट अशोक के काल में हुई थी। 105 फीट इस कुएं को अगम यानि पाताल से जुड़ा माना जाता है क्योंकि तब यहाँ पानी मात्र 20 फीट की गहराई की खुदाई मात्र से निकल आता था। इसके पास ही शीतला माता का मंदिर भी है, जहाँ रोज़ाना सैकड़ों पर्यटक व श्रद्धालु देश-विदेश से पूजा-अर्चना व अन्वेषण हेतु यहाँ पहुचते हैं।

पटना रेलवे स्टेशन के पास स्थित हनुमान मंदिर भी यहाँ के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है। हनुमान मंदिर के सामने ही फूलों का बड़ा बाज़ार सजा रहता है। कई प्रकार के फूल तो उत्तर-पूर्वी राज्यों से यहाँ बिकने को आते हैं।

पटना स्थित श्री हरि मंदर जी यानि पटना साहिब की देश-विदेश में काफी मान्यता है। वर्ष 2017 में 350 वां प्रकाश पर्व यहाँ धूम-धाम से मनाया गया था। श्रृद्धालुओं की सुरक्षा से लेकर फुटपाथ से अतिक्रमण हटाने, पार्किंग की विशेष व्यवस्था, श्रृद्धालुओं के नि:शुल्क इलाज, कंगन घाट पर बंदरगाह इत्यादि की व्यवस्था की गयी थी। पाँच हजार श्रृद्धालुओं के ठहरने तथा इनके लंगर की व्यवस्था कंगन घाट से लेकर किला घाट तक की गयी थी।

पटना संग्रहालय भी यहाँ के दर्शनीय स्थलों में से एक है। एक अप्रैल 2017 को पटना संग्रहालय ने सौ वर्ष पूरे किये थे। इसकी स्थापना 1917 में ब्रिटिश काल में हुई थी। इसे यहाँ जादूघर के नाम से जाना जाता है। यह संग्रहालय मुग़ल और राजपूत वास्तुशैली में निर्मित है। इस संग्रहालय को बिहार रिसर्च सोसायटी ने पटना और उसके आसपास मिली ऐतिहासिक वस्तुओं को संरक्षित करने के लिए स्थापित किया था।

पटना से लगभग 25 किमी की दूरी पर फल्गु नदी के तट पर बोध गया है जो बोद्ध धर्म के चार प्रमुख केन्द्रों में से एक है। माना जाता है कि यहाँ ज्ञान की प्राप्ति के बाद सिद्धार्थ, गौतम बुद्ध कहलाये थे। कहा जाता है कि जब गौतम बुद्ध ज्ञान की खोज में मगध के रास्ते लट्ठीवन (आज के जेठियन गाँव से होते हुए उरुवेला (आज के बोधगया) जा रहे थे, तब मगध नरेश बिंबिसार के अनुचरों ने उन्हें जासूस होने के शक में रोका था। बिंबिसार को जब उन्होंने बताया कि वे ज्ञान की खोज में उरुवेला जा रहे हैं तो बिंबिसार ने उनसे आग्रह किया कि ज्ञान प्राप्ति के बाद आप इसी रास्ते से वापस लौटें। ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध के वापस लौटते समय जेठियन में बिंबिसार ने उनका स्वागत किया और वेणुवन में ठहराया जहाँ बुद्ध ने पाँच साल तक वर्षावास किया। 13 दिसम्बर 2016 को लामा लोबंगंज के नेतृत्व में बारह सौ बौद्ध श्रृद्धालुओं ने जेठियन से राजगीर वेणुवन की साढ़े 15 किमी. की धम्म पदयात्रा की थी। इसमें भारत के अलावा श्रीलंका, कम्बोडिया, म्यामार बांग्लादेश, चीन, वियतनाम, इंडोनेशिया, थाईलैंड, जापान, ताईवान, मलेशिया इत्यदि 15 देशों के पुरूष व महिला बौद्ध भिक्षुओं ने भाग लिया था ।

गया में माँ मंगलागौरी का प्रसिद्ध शक्तिपीठ भी है, जिसे पालनपीठ भी माना जाता है। यहाँ मां महालक्ष्मी के रूप में विराजमान हैं। किंवदती है कि जब सती ने दक्ष यज्ञ में अपने शरीर का उत्सर्ग किया तो भगवान शिव ब्रहमांड

मार्ग से उस शव को लेकर चले जा रहे थे और जहाँ-जहाँ माँ सती के अंग गिरे, वहाँ- वहाँ आज शक्तिपीठ यानि जाग्रित शक्तियाँ विराजमान हैं। कहा जाता है कि यहां मां सती का पालन भाग गिरा था।

माँ मंगलागौरी का मंदिर पूर्वाभिमुख एक ऊंचे टीले पर स्थित है। मंदिर के गर्भग्रह में अखण्ड दीप जलता रहता है। काले प्रस्तरों की देव मूर्तियोँ, जिनमें भगवान शिव-पार्वती, गणेश व भैरव के दर्शन भी यहाँ होते हैं। यहाँ शिव मंदिर भी है। मंदिर के पीछे व उत्तर की ओर अष्ट भुजा काली व छिन्नमाता का मंदिर भी है।

गंगा और गंडक नदियों के संगम पर स्थित सोनपुर का मेला लगता है। यह मेला स्थानीय लोगों में छतर मेला के नाम से भी प्रसिद्ध है। सोनपुर का यह मेला पहले हाजीपुर में लगता था फिर 1850 से हाजीपुर के बजाय सोनपुर में जुड़ने लगा। कहा जाता है कि बाद के वर्षो में यहाँ देश के कोने-कोने से बडे व्यापारी ही नहीं अपितु एशिया के कई देशों के व्यापारी भी आते थे व विभिन्न प्रकार के पशुओं की खरीद फरोख्त करते थे। इसके अलावा यहाँ घुड़दौड़, टेनिस, पोलो इत्यदि खेलों का आयोजन होता था। जिसमें काफी संख्या में ब्रिटिश लोग भाग लेते थे। कहा जाता है कि मेले में लोगों के आवागमन की सुविधा के लिए तब रेलगाड़ी भी उपलब्ध कराई जाती थी परन्तु द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इस मेले में बाहर के व्यापारियों की आवाजाही बंद होने के कारण मेला अपना व्यापारिक महत्व खोता गया। स्वतंत्रता के बाद 1953 में एक बार फिर इस मेले को जीवित करने की कोशिश की गई। आज भी यहाँ मेले में कई तरह के बाजार लगते हैं। मीना बाजार, बैल बाजार, गाय बाजार, भैंस बाजार, बकरी बाजार, नाना पंछियों का बाजार, घोड़ा बाज़ार भी सजते हैं। सर्कस, मौत का कुआं इत्यदि खेलकूद भी जगह-जगह पर आयोजित होते हैं।

सोनपुर में हरिहर नाथ का प्रसिद्ध मंदिर है। माना जाता है कि हरि व हर का मिलन स्थान होने के कारण ही यह हरिहर कहलाया। यह भी माना जाता है कि भगवान श्री राम, धनुष यज्ञ के लिए मिथिला जा रहे थे तब यहाँ पर उन्होंने भगवान शिव की आराधना की थी जिसके फलस्वरूप यहाँ हरिहर नाथ मंदिर की स्थापना हुई। माना जाता है कि यहाँ लगभग सौ मठ- मंदिर हैं जिनमें गौरीशंकर मंदिर, रामजानकी मंदिर इत्यदि कई प्रमुख मंदिर हैं। गंगा और गंडक नदियों के संगम से इस स्थान को गज-ग्रह के सत्ताईस दिनों के युद्ध से भी जोड़ा जाता है।

यात्रा वृतांत (बैंगलोर पैलेस)

राजेन्द्र कुमार
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी,
कार्यालय लेखापरीक्षा निदेशक
वायु सेना, बैंगलोर

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी के पद पर पदोन्नति के उपरान्त मेरा स्थानांतरण बैंगलोर में हो गया था।

बैंगलोर शहर दक्षिण भारत के दक्षिण के पठारीय श्रेत्रों में लगभग 900 मीटर की ऊचाँई पर स्थित है। यह शहर पूरे वर्ष अपने सुहावने मौसम एंव "भारत की "सिलिकॉन वैली" अर्थात "आई.टी. राजधानी" के रुप में भी जाना जाता है।

यहाँ रहते हुए भिन्न-भिन्न स्थानों का भ्रमण करने का अवसर मिलता रहता है। इसी कड़ी में कुछ समय पूर्व मुझे अपने एक मित्र के साथ बैंगलोर महल घूमने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जो हमारे निवास स्थान से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है एंव सबसे अधिक देखे-जाने वाली जगहों में से एक है।

इस महल का निर्माण सन 1874 में वाडियार राजंवश द्वारा शुरु करवाया था। 4 साल के उपंरान्त सन् 1878 में यह महल बनकर तैयार हो गया था। यह महल करीब 454 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है। जो शानदाक टयूड़र एंव स्कॉटिश शैली को दर्शाता है।

इस महल में लगभग 35 कमरें हैं जो नक्काशी एंव तस्वीरों सें सुसज्जित हैं। महल के दरवाजों पर भी सुन्दर चित्रण किया गया है। महल में तकरीबन 3000 सें भी अधिक तस्वीरों का संग्रह है। इस महल को आम जनता के लिए सन 2005 के पश्चात खोला गया था।

महल की पहली मजिंल पर हाथी का सिर भी लटका हुआ है एंव महल की छत को भी नक्काशी से सुशोभित किया गया है।

इस महल की झलक कुछ हिन्दी फिल्मों जैसे "बरसात" "कुली" एवं "जो जीता वही सिकन्दर" में भी देखी जा सकती है। इस महल का निर्माण करवाने में उस समय लगभग 10 लाख रुपये की लागत आई थी।

वर्तमान समय में महल का स्वामित्व श्री मती देवी वाडियार के पास है। महल के बाहर ग्राउडं में पार्क बना हुआ है जिसमें विभिन्न प्रकार के फूल खिले हुए हैं जो महल की शोभा को चार चाँद लगा देते हैं। बाहर सें देखने पर महल का नजारा बड़ा सुन्दर प्रतीत होता है।

पूरा महल घूमने में करीबन 2-3 घटें का समय लग गया। साँझ के समय हम वापिस घर लौट आए। महल का सुन्दर नजारा मस्तिष्क पटल पर अमिट छाप छोड़ गया जो जीवन भर अविस्मरणीय है।

सत्यवचन और गुस्सा

बीरेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

गाँव में एक प्राचीन मंदिर था जहाँ अक्सर कथावाचन होते रहते थे। एक बार उसी मन्दिर मे पंडितजी अपने कुछ शिष्यों के साथ कथावाचन कर रहे थे।

धीरे-धीरे कथा (प्रवचन) सुनने के लिए काफी सारे लोग एकत्रित होने लगे जैसा कि कथावचन के दौरान होता है। कथावचन वास्तव में पौराणिक महाकाव्यों से प्रेरित होता है। इसी दौरान वहाँ उपस्थित एक आदमी को प्रवचन में कहे गए कुछ शब्द या वाक्य अच्छे नहीं लगे और उसे गुस्सा आ गया वह पंडितजी के साथ गाली-गलौच करने लगा जबकि वह शब्द बिल्कुल सत्य थे। हम सब जानते हैं कि सभी लोगों का स्वभाव एक जैसा नहीं होता है। ऐसा होता देख वहाँ उपस्थित अन्य लोग नाराज़ हो गए और पंडितजी से बोले कि आप आज्ञा दीजिए, हमलोग इसकी अक्ल ठिकाने लगा देंगे, लेकिन पंडितजी ने कहा कि इसे छोड़ दो और जाने दो, कुछ मत कहो इसे आप लोगों को कुछ करने की ज़रुरत नहीं है। उस व्यक्ति के वहाँ से जाने के बाद सब शांत हो गए। घर जाते वक्त रास्ते में उस आदमी का गुस्सा सातवें आसमान पर था और वह सोच रहा था कि पंडितजी ऐसा क्यों बोल रहे थे, वह अपने आप को समझते क्या हैं? धीरे-धीरे समय बीतता गया और उसका गुस्सा भी धीरे-धीरे शांत होता चला गया। बाद में जब उसे अपनी गलती का अहसास हुआ तो महात्मा से क्षमा मांगने के लिए मन्दिर की तरफ दौड़ पड़ा लेकिन तब-तक वहाँ से पंड़ितजी अपना प्रवचन समाप्त कर दूसरे गाँव की तरफ निकल पड़े थे।

उपरोक्त कहानी का सार यह है कि अगर कोई व्यक्ति आपसे कुछ कहता है और आप उसका जवाब नहीं देते तो इसका मतलब यह है कि उनकी बात पर आपने ध्यान नहीं दिया। आपके पास इतना बेकार का समय नहीं है कि आप ऐसे लोगों के बारे में सोचें, इसमें तो आपका ही नुकसान है। आवेश में आकर तुरंत प्रतिक्रिया नहीं देनी चाहिए क्योंकि इंसान आवेश में सही-गलत का आंकलन नहीं कर पाता है। व्यक्ति में सही-गलत का अंर्तज्ञान होना बहुत जरुरी है। अगर किसी व्यक्ति की बात आपको अच्छी नहीं लगती है तो इसका मतलब यह कदापि नहीं होना चाहिए कि सामने वाला बिल्कुल ग़लत बोल रहा है, ऐसा भी तो हो सकता है कि आपकी मानसिकता ही संकुचित हो।

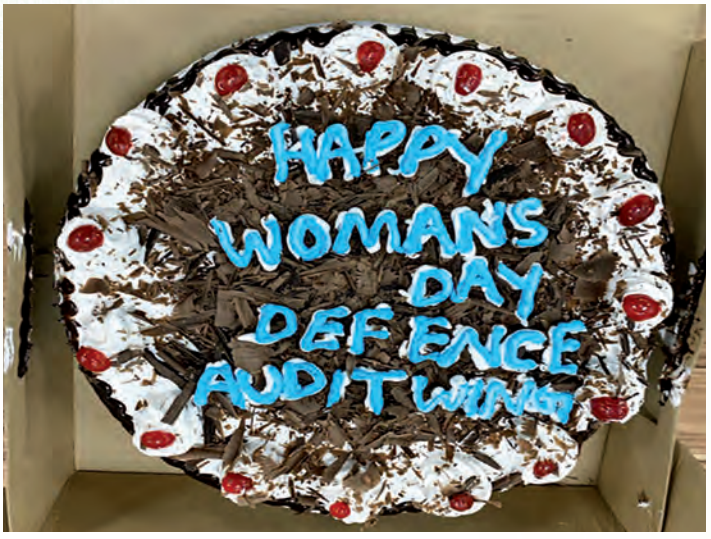
HAPPY
WOMANS
DAY
DEFENCE
AUDIT WING

जीवन के अनुभव की कुछ बातें

भरतराज
सहायक पर्यवेक्षक,
लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएँ), चंडीगढ़

1. एक खूबसुरत दिल हज़ार खूबसूरत चेहरों से ज्यादा अच्छा होता है, इसलिए ज़िदगी में ऐसे लोग चुनो जिनके दिल उनके चेहरों से ज्यादा खूबसूरत हों।
2. आकर्षण तो कहीं भी हो सकता है, पर समर्पण तो किसी ख़ास के लिए ही होता है।
3. खुश रहने का मतलब यह नहीं होता कि सब कुछ ठीक है, इसका मतलब यह है कि आपने अपने दुखों से ऊपर जीना सीख लिया है।
4. सब्र करो, बुरे वक्त का भी एक दिन बुरा वक्त आता है, हर दर्द की है एक दवाई, हँसना सीखो मेरे भाई।
5. इतिहास कहता है कि कल सुख था, विज्ञान कहता है कि कल सुख होगा, मगर आत्मा कहती है अगर मन अच्छा है और दिल सच्चा है तो हर रोज सुख है।
6. अगर हम बीते हुए हर पल से कुछ सीखना शुरु कर दें तो आने वाले हर पल को खुशहाल बना सकते हैं।
7. मैं हमेशां खुश रहता हूँ क्योंकि मैं किसी से कोई उम्मीद नहीं करता, मेरा अनुभव है कि उम्मीदें हमेशा दु:ख देतीं हैं।
8. खुशियाँ और सुख सुबह की तरह होते हैं, जो माँगने पर नहीं बल्कि जागने पर सुख देती हैं।
9. जब एक ही चुटकुले पर आप बार-बार हसँतें नहीं तो एक ही दुख: को याद करके बार-बार रोते क्यों हो।
10. खुशी के लिए काम करोगे तो खुशी नहीं मिलेगी पर खुश होकर काम करोगे तो खुशी ज़रुर मिलेगी।
11. पहले यह नाटक करो कि आप खुश हो, फिर धीरे-धीरे खुश रहना आपकी आदत बन जाएगी।
12. आँसू चाहे इंसान के हों या जानवर के, वो बाहर तभी निकलते हैं, जब दिल में बेइंतिहां दर्द होता है।
13. काम ज्यादा करो और बातें कम, क्योकि आजकल लोगों को दिखाई कम और सुनाई ज्यादा देता है।
14. दिल में बुराई रख के ज़ुबान का मीठा बनना मुझे नहीं आता, जिसे अपनाया दिल से अपनाया और जिसे छोड़ा तो दिल से छोड़ा।
15. जिंदगी में अब किसी से भी नाराज नहीं होना है, बस अब मतलबी लोगों को नजरंदाज करके जीना है।

हिंदुस्तान की भाषा हिंदी

जे.पी. गणेश बाबू
ले.प.
कार्यालय लेखापरीक्षा निदेशक
वायु सेना, बैंगलोर

मैं हूँ हिंदी.....
हिंदी-हिंदुस्तान का आरंभ हूँ,
मेरा सच्चा-अच्छा सा नाम है।
मेरा निवास स्थान है।
हर घर मेरा है, सबके दिलों में मेरा स्थान है।
मुझसे हुई है महफिल रोशनसरा यहाँ,
हिंदी है मेरी.....मैं हिंदुस्तान हूँ।

सबकी भाषा सबका विकास,
सबकी एकता, सबकी दृढ़ता, सबका कल्याण,
जम्मू से लेकर कन्याकुमारी तक सबका साथ देती हूँ।
कोई भी भाषा में कमी तो मैं उनके साथ हूँ,
हिंदी है मेरी.....मैं हिंदुस्तान हूँ।

दुनिया की कितनी भाषाऐं क्यों ना हो,
मैं यहाँ की शान हूँ,
दुनिया की भीड़ में भी मेरा स्थान है।
मैं रौशन निशान हूँ,
कायम रखी है मैनें रिवायतें दोस्ती,
करते सभी हैं सारे ऐसा मैं काम हूँ।
घंटी कहीं हूँ मैं, कहीं देखों अज़ान हूँ,
मुझमें सभी की यादें बसी हैं,
मैं भारत की आन हूँ,
मैं भारत की इज्जत हूँ, मैं इम्तिहान हूँ।
हिंदी है मेरी.....मैं हिंदुस्तान हूँ।

मालूम है मुझे कि मैं सख्त जान हूँ,
मुश्किल कहीं हूँ मैं,
कहीं, कहीं बिल्कुल आसान हूँ,
हर रोज करती हूँ बातें,
मैं खास हूँ कहीं पर, कहीं देखूँ तो मैं आम हूँ,
मैं सबका प्यारी लगती हूँ,
मैं सबको सरल लगती हूँ,
मै सबकी आशा हूँ , मैं सबकी प्रिया हूँ।।
हिंदी है मेरी.....मैं हिंदुस्तान हूँ।

भारत की करोड़ों जनता के दिलों में बसी हूँ,
सभी लोग मुझे चाहते हैं,
देश की सरकार मेरी सहायता से चल रही है,
सारा काम-काज मैं आसान करती हूँ।
मैं देश की आन-बान और शान हूँ,
हिंदी है मेरी.....मैं हिंदुस्तान हूँ।।

हमारा हिंदुस्तान

उर्मिला

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

हमारा देश हिन्दुस्तान
सब देशों में है यह महान
इसमें अलग-अलग जातियों के लोग रहते हैं
पर सब की एक ही पहचान
हमारा देश हिन्दुस्तान
इसके लोगों की अलग-अलग भाषा, अलग-अलग वस्त्र
अलग लेख हैं, पर हिन्दुस्तान पर विपदा आने पर सब एक हैं
सोने की चिड़िया नाम सुनकर
अंग्रेजों ने दृष्टि तानी, कि भारत को उसकी औकात है दिखानी
ठान कर भारत के राजंवशों को हराकर
ब्रिटिश सरकार है लानी।
पर चौंकाने की बात तो यह है कि
इस कार्य की प्रकिया अंग्रेजों ने पूरी कर डाली।
अंग्रेजों का अत्याचार न झेल सके स्वतंत्रता सेनानी
हिन्दुस्तान ने मन में ठान लिया कि अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से भगाना था
अंग्रेजों भारत छोड़ो, यह नारा लगाना था
फिर आखिरकार कई सालों के परिश्रम के बाद
भारत की धरती को अंग्रेजों ने छोड़ दिया
पर बदले में हिन्दुस्तान का खज़ाना ले लिया।
और आखिर में हिन्दुस्तान ने भी कह दिया कि
अबकी बार तो अहिंसा से समझाया है
अगली बार तो जान से मार देंगे ।

प्रदूषण

काशी राम
पूर्व निदेशक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

दम घोंटू गैसें शहरों में, हैं बनी हुई शैतान
रोगी खांसी, टीबी, साँस के बन रहे यहाँ मेहमान
प्रदूषण विकास का ले रहा है पर्यावरण के प्राण
सोच भला किस बात का है तुझको अभिमान
प्रकृति को लूट रही है तेरी धन-दौलत की शान
'कल' मिट्टी में मिल जानी है, हस्ती सभी महान
चीख रहीं हैं लाशें, देख मिल नहीं रहा शमशान
और कहाँ तक भागेगा बता धरती पर इन्सान?
संभल काम नहीं आएगा घंटा और इंसान
पेड़ लगाओ पहाड़ बचाओ बन मत अब अंजान
बिना रंगों के भी जीवन में रह सकती है मुस्कान
प्रकृति की ओढ़नी केवल देगी तुझको दान ।।

मैं गधा

गौरव सिंह
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

जानवरों में गधा सबसे ज्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है।

हम जब किसी आदमी को अव्वल दर्जे का बेवकूफ़ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं।

गधा सचमुच बेवकूफ़ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता।

गायें सींग मारती हैं, ब्यायी हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रुप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ जाता है। किन्तु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना न देखा।

जितना चाहे गरीब को मारो, चाहो जैसी ख़राब, सड़ी हुई घास सामने ड़ाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी नहीं दिखाई देगी। वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो, पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा।

उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद, स्थायी रुप से छाया रहता है। सुख-दु:ख, लाभ-हानि, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋर्षियों-मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं, पर आदमी उसे बेवकूफ़ कहता है।

सदगुणों का इतना अनादार कहीं न देखा।
कदाचित सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है

मैं हूँ गधा इस जीवन में
हर रोज सुबह जग जाता हूँ ।
करता हूँ काम मैं सारे दिन
हर शाम को मैं थक जाता हूँ।
पीड़ा नहीं, है ये मर्म मेरा
कैसा है जग में कर्म मेरा
व्यस्तता भरी है जीवन में
फिर भी सम्मान न पाता हूँ।
मैं हूँ गधा इस जीवन में
हर रोज सुबह जग जाता हूँ।

कहते हैं मुझे वैशाखनन्दन
रुखा-सूखा मैं खाता हूँ
जब-जब हरियाली आती है
तब मैं कमज़ोर पड़ जाता हूँ।
मै हूँ गधा इस जीवन में
हर रोज सुबह जग जाता हूँ।
होकर बेपरवाह जीवन में
मै कितना बोझ उठाता हूँ।
मालिक के घर का जो चूल्हा है
अपनी मेहनत से जलाता हूँ
अफसोस मुझे है जीवन में
फिर भी मैं गधा ही रह जाता हूँ
मै हूँ गधा इस जीवन में
हर रोज सुबह जग जाता हूँ।
“ मैंने गधे की पीड़ा को गहराई से महसूस करने के पश्चात्
इसे अपने शब्दो का रुप देने का प्रयास किया है” ।

यही तो जीवन है

भारती प्रवीण
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा, मध्य कमान (मेरठ कैन्ट)

एक मासूम ने पूछा अपने पिता से
पापा-पापा बच्चा क्यों नहीं एक दम से बढ़ जाता
कितना अच्छा होता अगर हर कोई
बड़ा ही दुनिया में आता
सब कुछ हमें पहले से आता
और जो हम चाहते हैं आसानी से मिल जाता
क्यों झेलें इतनी तकलीफ
क्यों इतने कष्ट उठाएँ
ऐसा क्यों न हो जिसको जितना चाहिए
आसानी से मिल जाए
पागल था भगवान शायद जो उसने ऐसी दुनिया बनाई
हर किसी को कमी है यहाँ
जिसकी वजह से लड़ें भाई-भाई
अगर सबके पास सब कुछ होता
तो किसी का न किसी से झगड़ा होता
हर जगह बस प्यार होता
होती हर जगह खुशियाँ
न कोई दु:ख में रोता
पिता जी बोले
अपने अनुभव से राज खोले
बेटा अगर न कोई छोटा होता
तो कैसे जीवन का ये सुख ले पाते
बच्चे हो इसलिए नहीं पता
कि क्या मिस कर जाते
सुख, दु:ख खुशियाँ संघर्ष
ये सब हैं इसलिए इनका महत्व हम नहीं जानते
इनका अपना आनंद है ये नहीं मानते
सोचो अगर सभी को सब कुछ
आसानी से मिल जाता
तो क्या किसी का दूसरे के लिए
कुछ महत्व रह जाता?
क्या करते हम अगर कुछ करने की
ज़रूरत ही न होती
बिना किसी लक्ष्य और काम के
कैसी हमारी जिंदगी होती
कैसे हो पाते जीवन में स्थापित आदर्श
अगर सभी होते अपने आप में समर्थ
धीरे-धीरे बढ़ने का यही तो आनंद है
अपने बल-बूते पर कुछ हासिल कर
मुकाम पर पहुँचना
यही तो जीवन है
यही तो जीवन है.....

पापा, वो गुजरा ज़माना याद आता है।

किरन कुमारी सौंखला,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक,
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं , चंडीगढ़

जब भी किसी असमंजस और परेशानी में होती हूँ, तो
आपका सिर पर हाथ रखकर, प्यार से समझाना,
फिर सारी चिन्ताओं का दूर हो जाना, याद आता है
पापा, वो गुज़रा ज़माना याद आता है।

जब आप साल के दो महीने छुट्टी लेकर घर आते,
तो आपको देखकर बहुत खुश हो जाना,
उछल-उछल कर सबको बताना, याद आता है,
पापा, वो गुज़रा ज़माना याद आता है।

मम्मी का हमें किसी बात पर डाँटना,
भागकर आना, और आपके पीछे छिप जाना,
फिर मम्मी को चिढ़ाना याद आता है,
पापा, वो गुज़रा ज़माना याद आता है।

छोटी-छोटी बात पर मुहँ फुलाना,
खाना ना खाना, और आपका खाना लेकर आना,फिर मुझे
बहुत प्यार से मनाना, याद आता है,
पापा, वो गुज़रा ज़माना याद आता है।

मेरी शादी के समय, मुझ-से नज़रें बचाना,
मेरे सामने ना आना, विदाई के समय किसी कोने,
में जाकर फूट कर रोना, याद आता है,
पापा, वो गुज़रा ज़माना याद आता है।

ससुराल से घर आते समय,
रास्ते में बार- बार आपके फोन का आना
आँगन में लगी कुर्सी में बैठे रहना,
गेट को निहारना, याद आता है,
पापा, वो गुज़रा ज़माना याद आता है।

वापिस ससुराल आते हुए,
सीढ़ियों से आपका नीचे ना आना,
लेकिन बॉलकनी में खड़े रहकर
गाड़ी को हाथ हिलाना, याद आता है,
पापा, वो गुज़रा ज़माना याद आता है।

अब ना कोई रुठना है, ना कोई मनाना,
अब आपके साथ बिताया वो समय याद आता है,
पापा, वो गुज़रा ज़माना याद आता है।
वो गुज़रा ज़माना याद आता है।

सफलता के मूल मंत्र

1. उठो, जागो, रुको नहीं : - उठो, जागो और तब तक रुको नहीं जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए।
2. अनुभव ही शिक्षक : - जब तक जीना, तब तक सीखना अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ट शिक्षक है।
3. पवित्रता और दृढ़ता : - पवित्रता, दृढ़ता तथा उद्यम ये तीन गुण मैं एक साथ चाहता हूँ।
4. ज्ञान और आविष्कार : - ज्ञान स्वयं में वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका आविष्कार करता है।
5. स्तुति करें या निंदा : - लोग तुम्हारी स्तुति करें या निंदा, लक्ष्मी तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो, तुम्हारा देहान्त आज हो या एक युग में, तुम न्याय पथ से कभी भ्रष्ट न हो।
6. मस्तिष्क पर अधिकार : – जब कोई विचार अन्य रुप से मस्तिष्क पर अधिकार करता है, तब वह वास्तविक, भौतिक या मानसिक अवस्था में परिवर्तित हो जाता है।

मित्र

उर्मिला
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

करो मित्र की मदद हमेशा।
तन से, मन से खुश होकर
उसका जो भी काम पड़े
तुम उसे करो पूरा हँसकर ।।

खाना हो जब पास तुम्हारे।
तुम भी उसको देकर खाओ
फल हो या हो मेवे की मिठाई
बाँट-बाँट के खाओ भाई ।।

बोझ उठाता हो जब साथी।
तुम भी उसकी मदद करो
पड़ जाए बीमार अगर वह
सेवा उसकी सदा करो ।।

साथी भी हर एक काम में।
हँसकर हाथ बटायेगा
काम पड़ेगा कभी तुम्हारा
पूरा कर दिखलायेगा।

ज़िम्मेदारी से मुक्ति

आकाश त्रिवेदी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा रक्षा सेवाऐं, मध्य कमान, प्रयागराज

छत से उड़ता हुआ, वो आंगन में आ गिरा,
माँ चौंक के चीखी, जब दामन में आ गिरा।
आवाज इतनी जोर जैसे, कोई बम फटा हो,
या कहीं गरजी कोई, घनघोर घटा हो।
मुँह के बल जमीन पर, एक धड़ पड़ा था,
हाथ में वैष्णों देवी वाला कड़ा था।
सहम कर हाथ से, चावल की थाली फेंक कर,
बेहोश हो गई फर्श पर, खून की लाली देख कर।
सामने माँ के उसका, बेटा पड़ा था।
कुल का चिराग घर में, सबसे बड़ा था।
खानदान की उम्मीदों का, बोझ वो उतार गया,
निराशा फिर जीत गई, हौंसला फिर हार गया।
होश आया माँ को तो, भीषण विलाप करने लगी,
गिनती में सत्कर्म थे,धर्म था, कुछ त्याग था।
माँ के उतने श्रम का, कैसा ये आशीर्वाद था।
रोते-रोते थी उनकी, दोनों आँखें सूज गईं,
फिर ख़ुद ही इस सबके, कारण को वो बूझ गईं।
तब तक वर्दी वाले कुछ, इसे आत्महत्या बता रहे थे,
पोस्टमार्टम के लिए शरीर को ले जा रहे थे।

चीख़ कर बोली सबको ये आत्मा नही बस कृत्यां है,
जिसके कातिल हम दोनों है, जो दिख रहा वो मिथ्या है।
कत्ल किया था एक भ्रूण का, लिंग की जाँच करवा कर,
कई साल रातभर जागे थे, एक कन्या को हम मरवा कर।
जब हुआ पूत तब जाकर कहीं सुख की नींद आई थी,
अपनी आँख को मूंदकर, कुकृत्य से आँख चुराई थी।
अब रुको नहीं आगे आकर, हथकड़ी हाथ में लगा दो,
जो किया पाप सालों पहले, उसकी आज सज़ा दो।
कहते- कहते माँ वहीं बेहोश हो गई,
ज़िम्मेदार समाज की जनता ख़ामोश हो गई।।

प्रातः वंदना

अमित सिंह,
लिपिक/टंकक
कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, चंडीगढ़

पीड़ा सारी मिट गई
लिया जो प्रभु का नाम
गज़ब कृपा है आपकी
रघुनंदन श्री राम, सीता राम
ना गिला करते हैं,
ना शिकवा करते हैं,
बस आप सलामत रहो,
आने वाले नए साल में
ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं।
किसी के साथ रहो तो वफ़ादार बनके रहो,
धोखा देना गिरे हुए लोगों की पहचान है।
कोई भी कारण हो,
कोई भी बात हो, चिढ़ो मत,
गुस्सा मत करो, ज़ोर से मत बोलो,
मन शांत रखो, विचार करो, फिर निर्णय लो,
आवाज़ से आवाज़ नहीं मिटती बल्कि चुप्पी से मिटती है।
तकलीफ़ सिर्फ आपको ही होगी,
मन शांत रखोगे तो खुशी भी आपको ही मिलेगी।

महंगाई

काशी राम
पूर्व निदेशक
कार्यालय महानिदेशक,
लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

मत पूछो आज कल कैसे अपने हाल
मंहगाई की मार से हुए बहुत बेहाल
हुए बहुत बेहाल, परेशान दुनिया सारी
मरना आसान हुआ, अब जीना भारी।

श्रीमती जी हर रोज दाल के भाव गिनायें
घिया, बैंगन भी अब पहुँच से बाहर निकले जाऐं
पहुँच से निकले जाए, कैसे करें गुजारा भैया
बासी सब्जी खाकर भी ना अब बचे रूपया।

बच्चों का है हाल बुरा, बिन टयूशन सब फेल
पढ़ना लिखना भी अब तो पैसे का है खेल
पैसे का है खेल समझो ना ये बात ज़रासी
साहब से तो अच्छे हैं रिश्वतखोर चपरासी।

महंगाई के बोझ तले दब गए जिनके अरमान
वो कैसे उभरें बेचारे हर पल संकट में है जान
संकट में है जान, कर्ज़ का फ़िक्र सताए
मेहनत करें दिन-रात पर नहीं छुटकारा पाऐं।

हर घर की है यही कहानी, यही रोना-धोना
आमदनी बहुत कम, खर्च कुछ ज़्यादा होना
खर्च कुछ ज़्यादा होना, समझ की नादानी
ना बच्चे, ना बीवी हो तो ऐश में कटे जवानी।

शादी से बचना, पत्नी है संगम बेताल सुरों का
मेरा भी क्या यही अनुभव, है गैरों का?
अनुभव है गैरों का, टूट जातें हैं सारे सपने
नहीं यकीं आये तो पूछ लो पिता से अपने।।

जैसा सोचोगे वैसे तुम बन जाओगे

उर्मिला
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

आदर्श संगति में तुम निखर जाओगे
मंजिल यहां से कहाँ दूर है
सोच-सोच की बात है,
सोचकर तो देखो
दुख-पीड़ा से थोड़ा उठ कर देखो
आज हार मान गए तो,
फलहारी जीवन का आंनद
तुम कैसे लोगे
सफलता के शिखर की चढाई कठिन है पर असम्भव नही.
आत्मविश्वास को कायम रखो
अच्छा सोचो, अच्छा कर्म करो
यही कुदरत का करिश्मा है
जैसा तुम सोचोगे वैसा तुम बन जाओगे
आदर्श संगति में तुम निखर जाओगे
बस हुनर का हो जाए अहसास
मन में जग जाए विश्वास
तो अंधकार भी बन जाए प्रकाश
अब सोच आपकी शुद्ध हो या अशुद्ध
यह विश्लेषण तय करना होगा आपको खुद।

जंगल हमें सिखाते हैं, पुनः हरे हो जाना

अनीता चुटानी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

जंगल हमें सिखाते हैं, पुन: हरे हो जाना
चोट आदमी की हो, या हो प्रकृति की
हर स्थिति में,
स्वंय ही स्वंय को संभालना
और पुन: हरे हो जाना।
नदियाँ हमें सिखाती हैं, निंरतर गति बनाए रखना
पथ पथरीला हो, या फिर हो मैदानी
राह बदलनी है, मंजिल नहीं
मंजिल के सफर में,
कर्म-पथ पर डटे रहना।
मैदान हमें सिखाते हैं, जीवन में समरसता रखना
विभीषिका बाढ़ की हो या फिर हो मरुता सुखाड़ की
हर विपदा में सहज रहना
ख़ुद को पुन: सींच कर,
अपनी उर्वरता व समर्थता बनाये रखना।
पर्वत हमें सिखाते हैं, अटल-अविचल रहना
बवंड़र हो या फिर हिमस्खलन
सिर्फ वही स्थायी है, अन्य तो अस्थायी हैं
हर स्थिति में,
दृढ़ता के साथ, अपना स्थायित्व बनाये रखना।
हवा हमें सिखाती है, अदृश्य अमृत रहना
चाहे पान करे श्वान या हो फिर इन्सान
अविभेद की मर्यादा लिए बहते रहना
शुद्ध हो प्रकृति हमारी,
अपनी प्रकृति को हमें है बनाये रखना।
जंगल हमें सिखाते है, पुनः हरे हो जाना।

खेलों में रक्षा

नाम : भाव्या ऋषि (लेखापरीक्षक)
कार्यालय : महानिदेशक लेखापरीक्षा, नौसेना, नई दिल्ली
प्रतियोगिता : सी.ए.जी. की बैडमिंटन टीम का चयन परीक्षण
स्थान : प्रथम
खेल : बैडमिंटन
स्थल : लुडलो कैसल, नई दिल्ली
दिनाँक : 01 जुलाई 2022 से 05 जुलाई 2022
वर्ग : महिला एकल

लेखापरीक्षा विभाग

नाम : विदुषी वत्स (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
कार्यालय : महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली
प्रतियोगिता : अखिल भारतीय सिविल सेवाएं, टेबल टेनिस चैंपियनशिप-2021-22
स्थल : आगरा (24 जून 2022 से 28 जून 2022)
स्थान : तृतीय
खेल : टेबल टेनिस
वर्ग : मिश्रित युगल

प्रतियोगिता : अंतर मंत्रालय टेबल टेनिस चैंपियनशिप 2022-23
स्थल : जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम, दिल्ली
(12 सितम्बर 2022 से 23 सितम्बर, 2022)
स्थान : द्वीतीय
खेल : टेबल टेनिस
वर्ग : 1. टीम चैंपियनशिप
2. महिला एकल
3. मिश्रित युगल

अब हमें कोई पूछता नहीं

श्रवण कुमार ठाकुर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं , नई दिल्ली

तख़्त था, ताज था, स्वंय का राज था
लोग थे, अपने थे, सपने थे,
ठाठ थी, शोख़ी थी, अपनी ही ज्योती थी
रंग था, संग था, भंग था,
सब था, उमंग था, जंग था, पतंग था
एक बार गिरा क्या,
ना उमंग रही, ना पतंग
अब तो हमें कुछ सूझता नहीं
अब हमें कोई पूछता नहीं।

दोस्त था, दोस्ती थी, प्रेम था, सब कुशल-क्षेम था
ठौर था, ठिकाना था,
लोगों के पास मिलने को बहाना था,
छल था, प्रपंच था, सत्ता का संग था।
एक बार सत्ता क्या गई,
ना रहा दोस्त, ना रही दोस्ती
अब तो हमें कोई ढूढ़ता नहीं
अब कोई हमें पूछता नहीं।

मान था, सम्मान था, अपना स्वाभिमान था
ध्यान था, ज्ञान था, सब का परिणाम था
मर्म था, धर्म था, कर्तव्य का अभिमान था
दया थी, करुणा थी, ललक थी, महक थी
दमक थी, चमक थी
औहदे की चमक क्या गई,
ना मान रहा, ना लोगों का ध्यान
अब लोग हमें याद करते नहीं
अब हमें कोई पूछता नही ।

कोरोना

सुमन कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय-उपनिदेशक,
लेखापरीक्षा, वायु सेना, बैंगलोर

कोरोना की यह कैसी लहर
मच गया चारों ओर कहर
लोगों के बीच दो गज़ की दूरी
हो गई जान बचाने के लिए ज़रुरी।
इतिहास ने ना देखा ऐसा मंज़र
छा गया दुनिया में कोरोना का कहर
दूसरी लहर ने ढ़ाया सितम
देख उसे लोग गए सहम
हाथ-चेहरे की सफाई हो गई मजबूरी
कोरोना संक्रमण रोकने के लिए बन गई ज़रुरी।
पहली, दूसरी के बाद आ गई तीसरी लहर
पता नहीं कब आ जाए चौथी लहर
बचाव के लिए हम करें पहल
बचाव के नियमों पर करें अमल।

ये भी एक दौर है, वो भी एक दौर था

मयंक
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय लेखापरीक्षा निदेशक
वायु सेना, बैंगलोर

इज़्ज़तें, शोहरतें, उलफ़तें सब कुछ चाहते,
इस दुनिया में मिलती नहीं।
आज मैं यहाँ हूँ, कल कहीं और था,
ये भी एक दौर है, वो भी एक दौर था।
चलना जब सीखा हमने, मन मंद-मंद मुस्काया मैं,
मुस्काने वालों को जाना है एक दिन, हमें क्या पता था।
ये भी एक दौर है, वो भी एक दौर था।
बचपन को जाना है एक दिन, हमें क्या पता था।
ये भी एक दौर है, वो भी एक दौर था।
बचपन बीत गया, यौवन डाले है पड़ाव,
बुढ़ापा टक-टक देख रहा, काहे चिंता सताए साथ।
ये भी एक दौर है, वो भी एक दौर था।
बीत गई सदियाँ, बीतें हैं ज़माने,
चलो छोड़ो कुछ नया करने की ठानें।
ये भी एक दौर है, वो भी एक दौर था।
वो प्रेम-स्थिरता जीवन में कहाँ चली गई,
नफ़रत, भाग- दौड़ कण-कण समा रही।
चल पथ पर क्षमा-प्रेम-योग के, जो हमने ठाना था।
ये भी एक दौर है, वो भी एक दौर था।

ज़िंदगी के मर्म में

तनवी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं , नई दिल्ली

ज़िंदगी की आपा धापी में
हम हर रोज़ निकलते हैं
बेहतर की तलाश में
सोचकर
ज़िंदगी खुशहाल होगी अगर
अधिक कमाया तो
जो है उससे अधिक पाया तो
इस अधिक की चाह में
खोते हैं
अपने आप को, अपने सुकून को
अपने जज़्बात को
अब हमें खुद को खोना नहीं
बेहतर के तलाश में
इस अंधेरे प्रयास में
कुछ सुकून ढूंढ़ने हैं हमें, अपने कर्म में
कुछ सुकून ढूढ़ने हैं हमें, अपने कर्म में
कुछ अनुत्तरित प्रश्नों के उतर ढूढ़ने हैं हमें
जिंदगी के मर्म में।
जब मैं अकेले बैठता हूँ
सोचता हूँ
क्या वह समय फिर लौट के आएगा
वो विद्यालय के दिन
दोस्तों का साथ
अपनी बात मनवाने की जिद
दूसरों की बात न मानने की हठ
ना मैं बेहतर ना बेहतर की सोच
सिर्फ लगन से पढ़ना
हर कक्षा में आगे बढ़ना
उस दौड़ की यादों को सजाना है हमें आज के कर्म में
कुछ अनुत्तरित प्रश्नों के उतर ढूढ़ने हैं,
जिंदगी के मर्म में
वो कुछ समय पहले की बात थी
विश्वविद्यालय की चौखट थी
कोचिंग की क्लास थी
हमें नौकरी की तलाश थी
जज़्बा तब भी था, कुछ बेहतर करने का
अपने ज्ञान के परिधान से खुद को सँवारने का
तोड़नी थी परिधि अज्ञान की
सतत ज्ञान प्राप्ति के उस गुण-धर्म को
जोड़ना है आज हमें अपने कर्म-प्रण में
कुछ अनुत्तरित प्रश्नों के उतर ढूढ़ने हैं हमें
जिंदगी के मर्म में।

संघर्ष

एस. के. श्रीवास्तव
एम.टी.एस.
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं , उ. क. (जम्मू)

तारे आसमां में अपना गुज़र करते हैं।
चाँद छुप कर वहाँ भी निकल आता है।
हम तो ज़िदगी छुपा कर, संजों के रखते है।
मौत का साया वहाँ पर भी पहुँच जाता है।
तूने ज़िदगी क्यूँ इस तरह बनाई है।
मौत के साथ क्या दोस्ती बनाई है।
लोग घबराते हैं, क्यों इस दोस्ती से यारों।
सबका अपना-अपना फर्ज जो निभाते हैं।
ज़िंदगी देने वाले क्या दोस्ती बनाई है।
फिर मौत के दामन से हम ऐसे क्यों घबराते हैं।।

मैं पानी बनना चाहती हूँ.....

नर्मदा कुमारी
वरिष्ठ अनुवादक
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा
मध्य कमान,
मेरठ छावनी

जीवन की इस भागती-दौड़ती दुनिया में
मैं पानी बनना चाहती हूँ
हाँ-हाँ मैं पानी बनना चाहती हूँ.....
जब जीवन की विषम परिस्थितियाँ सताने लगें, तो
मैं पानी की तरह बर्फ़-सी जमना चाहती हूँ
सफेद- सी शांति पाना चाहती हूँ
हाँ-हाँ मैं पानी बनना चाहती हूँ.....
जब पंख पसार उड़ने का मौका मिले तो
मैं पानी के भाप-सा उड़ना चाहती हूँ,
भाप से फिर बूँद बनकर बरसना चाहती हूँ
हाँ-हाँ मैं पानी बनना चाहती हूँ.....
जब जीवन में रुकावटें आयें तो
मैं पानी की तरह बहना चाहती हूँ
बस अनवरत गति से चलना चाहती हूँ
हाँ-हाँ मैं पानी बनना चाहती हूँ.....
जब जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव आयें तो
मैं पानी की तरह हर रंग में घुलना चाहती हूँ
रंगो के मेल से एक नया रंग बनाना चाहती हूँ
हाँ-हाँ मैं पानी बनना चाहती हूँ.....

पिंजरा

काशी राम
पूर्व निदेशक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं , नई दिल्ली

पिंजरे के अंदर चाहे जितनी भी,
बेटी को आज़ादी दे दो
आसमान छूने के सपने
जितने चाहे उसको दे दो

जब तक बंधन घर आँगन के
रस्सी बन कर रहेंगे लिपटे
इज़्ज़त-आबरु, माता-पिता की
नागिन बन कर रहेंगे चिपटे।

जहाँ एक भूल पर बेटी की
ममता भी दुश्मन हो जाती है
पर काली करतूतों पर बेटेकी
शर्म भी नहीं आती है।
बेटी समाज का दर्पण है
ऐसा लोगों का कहना है
फिर भी उसकी किस्मत में
घर में भी डर-डर के रहना है।

जिस दिन बेटी इस देश में
विद्रोह का दीप जलाऐगी
उस दिन वो खुले आसमान में
असीमित उड़ान भर पाएगी।

संघर्ष की धुन

गौरव कथूरिया
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं , चण्डीगढ़

बेबसी का ना जाने कैसा मौसम छाया था।
हर बार लक्ष्य से चूकता था, हर बार खुद से हारता था।।

चारों तरफ अँधेरे में इक रोशनी की आस रखता था।
डर लगता था कभी ज़िंदगी अँधेरे में ही ना बीत जाए।।

हर चमकती चीज़ को अपनी मंजिल समझता था।
नादान था मैं जो उस राह को अपनी राह समझता था।।

इक आवेश की तलाश में दर-दर मैं भटकता था।
खुद को समझने की जुस्तजू में नाकाम कोशिश करता था।

सौ बार सुन चुका था, मन के उन ज्ञानियों से।
क्यों ढूंढ़ता है तू किरण जब सूरज तुझमें समाया है।

झांकता था जब खुद में, फिर अँधेरा पाता था।
कमज़ोर इस दिल को और कमजोर पाता था।।

बेकरार इस खोज में मैं फिर सुनने जाता था।
क्या पता था मुझे बस इक बार ही सुनना बाकी था।।

ज़िंदगी के इस मोड़ पर अब इक नई उम्मीद जागी है।
रास्ते को मंज़िल समझ दिल, इक नई धुन का मुसाफिर है।।

ना भव में ना भूत में, इसी लम्हे में सब कुछ पाता हूँ।
निकला हूँ नई राह पे, बहुत दूर जाना चाहता हूँ।

ज़िन्दगी के संघर्ष

मोना कुमारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(नौसेना), नई दिल्ली

थी एक चंचल सी लड़की
करती थी हमेंशा अपने मन की
पढ़ाई में थी औसत दर्जे की
परन्तु हरेक कला में थी अव्वल दर्जे की।

हिस्सा लेती और पुरस्कार जीतती
हर प्रतियोगिता में भाग लेती
अब बारी आयी ज़िन्दगी की प्रतियोगिता की
फैंसला छोड़ा पिता ने अपनी बेटी पर

वो चंचल बेटी अब समझदार हो गई
विवाह को छोड़, कुछ करने को फैसला कर गई
सुना दिया फैसला अपने पिता को
विवाह नहीं अपना भविष्य बनाना है मुझको।

पिता ने अपनी बेटी का दिया साथ
कहा करो मेहनत और रखो खुद पर विश्वास
उसने भी संघर्ष बहुत किया और पाया सफल मुक़ाम
सँवारी अपनी ज़िन्दगी और बढ़ाया परिवार का नाम।

संघर्ष ही जिंदगी है।

नेहा तिवारी
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा,
वायुसेना, बैंगलूरू

जिंदगी संघर्षो का ताना बाना है।
कब आना और कब जाना है।।
उलझन है कि जाने का नाम नहीं लेती है,
जीवन के पैमाने का इक-इक जाम पी लेती है।
कब, कहाँ और कैसे ठौर-ठिकाना है।
जिंदगी संघर्षो का ताना बाना है।।
जब भी जी चाहे भुला देते हैं लोग,
गमों का चिराग जला देते हैं लोग।
दिलों में सबके प्यार का रगं चढ़ाना है,
खुद आइने की तरह दिलों में उतर जाना है।
बस इसी तरह प्रेम की लौ जलाना है,
जिंदगी संघर्षो का ताना बाना है।
ना कर तू फ़रियाद किसी से ए दिल,
थाम कर हाथ सभी का चलना है बड़ा मुश्किल।
वक्त के आगे कब किसकी चली है,
कभी ना कभी तो नावं मझधार में फँसी है।
बन के माँझी पतवार चलाना है,
जिंदगी संघर्षो का ताना बाना है।

ना उलट तू अतीत के पन्नों को,
जो भी रुठे हैं चलो मनाएं हम उन अपनों को।
क्या पता कब किसका आना जाना हो,
किराए के मकान को कब खाली करवाना हो।
इस बात को यूं ही सहते जाना है,
ज़िदगी संघर्षो का ताना बाना है।

कब मिला किसी को जो चाहा जिसने,
ग़म के पिटारे को सराहा किसने।
जो मिले उसे ही अपनाते जाना है,
आंनद से ही मिलता खुशियों का खज़ाना है।
ना ही शिकवा और ना शिकायत का फ़साना है
ज़िदगी संघर्षो का ताना बाना है।।

आओ चलाएँ, खुशियों के तीर हम,
कोशिश यही कि ना हों गंभीर हम।
अब तो बाकी बचे लम्हों को जीतकर जाना है,
सभी के दिलों में अपनी भी जगह बनाना है।
कोशिश यही कि मिल जुल कर सौहार्द बढ़ाना है।
संघर्षो का ताना बाना है।

अनजान सा हूँ मैं

राजकिरण
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाऐं, नई दिल्ली

इस तेज भागती जिन्दगी में, अनजान सा हूँ मैं।
अजनबियों के बीच बनती नई, पहचान सा हूँ मैं
टूटे सपनों को फिर से बुनता, नौजवान सा हूँ मैं।
बचपन में चेहरे पर खिलती, मुस्कान सा हूँ मैं।
गहराईयों की नई सीमाएँ नापता, आसमान सा हूँ मैं
मन की मंजिलों पर बनता, मुकाम सा हूँ मैं
अंकों के अंधे खेल से, हैरान सा हूँ मैं
ख्वाबों को ही खा जाऊँ ऐसा, इंसान सा हूँ मैं
जीत से मिली हार को चुकाता, अहसान सा हूँ मैं
गिर कर उठा पर फिर भी, निशान सा हूँ मैं
रंग बदलती दुनिया में, सुनसान सा हूँ मैं
ब्रांड और पब्लिसिटी के बीच, गुमनाम सा हूँ मैं
सब जानकर भी दोस्तों, नादान सा हूँ मैं
इस तेज भागती जिंदगी में, अनजान सा हूँ मैं

गुरु वंदना

शिवम् शुक्ला
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाऐं, नई दिल्ली

कुछ बदला है यूँ जीवन मेरा,
राह से भटका था मन मेरा।
लाया है जीवन में उजियारा,
था धुंधला सा भविष्य हमारा।।
है नमन तुम्हे गुरुदेव हमारा, है नमन तुम्हे गुरुदेव हमारा
कभी मात बन साथ दिया
तो कभी पिता बना डांटा।
कभी मित्र बन सरपट तुमने
है हर दुविधा से उबारा।
है नमन तुम्हे गुरुदेव हमारा, है नमन तुम्हे गुरुदेव हमारा
अंधियारी सी दुनिया में तुमने,
है ज्ञान का दीप जलाया।
कुछ कर गुज़रने की चाहत का,
है सपना साकार कराया।।
है नमन तुम्हे गुरुदेव हमारा, है नमन तुम्हे गुरुदेव हमारा

“क्या यही है जीवन का लक्ष्य?”

विदुषी वत्स
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

बचपन के खेलों में, गाँव के मेलों में,
मन लगा रहा, समय चलता रहा।
मोहल्ले की गलियों में, मित्रों की अठखेलियों में,
मन लगा रहा, समय चलता रहा।
कुछ बड़े हुए तो देखा
विद्यालय की दौड़ में, प्रतिस्पर्धा की होड़ में,
आसक्ति बनी रहीं, ज़िदगी चलती रही।
दुनिया की कलाकारी में, उंची खरीददारी में,
आसक्ति बनी रही, ज़िदगी चलती रही।
कॉलेज में आने पर और नई आज़ादी पाने पर
कभी चलचित्रों में, तो कभी नए मित्रों में,
लगाव बना रहा, ख्याल घना रहा।
बच्चे से युवा, युवा से वृद्ध होकर,
कट गए थे दिन मस्त होकर।
दुनिया के तमाशों में इतना घुला रहा इंसान,
भूल गया उसे जिसने दिया यह जीवन महान,
दूर हो चला इसकी दिनचर्या से राम का नाम,
पूछो कोई इससे, क्या यही था जीवन का लक्ष्य,
क्या यही था मानवता का काम?

हिंदी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों की सूची : वर्ष 2021

क्रमांक	नाम एवं पद (सर्व श्री/कुमारी/श्रीमती)	स्थान
वर्तनी शुद्धि		
1.	अर्चना निगम, स.ले.प.अ.	प्रथम
2.	सत्यवीर गौरव यादव, आशुलिपिक	द्वितीय
3.	सुधा शुक्ला, स.ले.प.अ.	तृतीय
4.	वीरेन्द्र कुमार, ले.प.	तृतीय
कहानी लेखन (चित्र देखकर)		
1.	सत्यवीर गौरव यादव, आशुलिपिक	प्रथम
2.	तनवी पराशर, व.ले.प.	द्वितीय
3.	गौरव सिंह, डी ई ओ	तृतीय
4.	सुनीता सिंह, ले.प.	सांत्वना
अनुवाद एवं पत्र लेखन		
1.	तृप्ता, ले.प.	प्रथम
2.	सुधाा शुक्ला, स.ले.प.अ.	द्वितीय
3.	अर्चना निगम, स.ले.प.अ.	तृतीय
4.	राम सिंह, व.ले.प.	सांत्वना
वाद–विवाद प्रतयोगिता		
1.	सुनीता सिंह, ले.प.	प्रथम
1.	गौरव सिंह, डी ई ओ	द्वितीय
1.	मोहित, आशुलिपिक	तृतीय
1.	उर्मिला, स.ले.प.अ.	सांत्वना

सेवानिवृत्त कर्मचारियों की सूची

क्रम सं.	एचओएस	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	श्रेणी	जन्मतिथि	सेवानिवृति तिथि	स्थान
1.	1734	वी. एम. कुलकर्णी	पर्यवेक्षक	सामान्य	17-01-1962	31-01-2022	पुणे
2.	1745	एस. नरसिम्हामूर्ति	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	09-02-1962	28-02-2022	बंगैलोर
3.	1906	राकेश रंजन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	09-02-1962	28-02-2022	पटना
4.	2035	राकेश कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	अनुसूचित जाति	15-02-1962	28-02-2022	मेरठ
5.	2445	भिवामहादेव गावड़े	एमटीएस	सामान्य	25-02-1962	28-02-2022	मुम्बई
6.	1823	निलम गिनौत्रा	पर्यवेक्षक	सामान्य	01-03-1962	28-02-2022	नई दिल्ली
7.	2293	नरेश कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	सामान्य	25-03-1962	31-03-2022	नई दिल्ली
8.	1848	बिप्लव सरकार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	30-03-1962	31-03-2022	कलकत्ता(क)
9.	1599	एन के गुप्ता	आशुलि-पिक-I	सामान्य	10-04-1962	30-04-2022	देहरादून
10.	2510	शिवप्रकाश	सहायक पर्यवेक्षक	सामान्य	05-05-1962	31-05-2022	प्रयागराज
11.	2302	बिजय कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	अनुसूचित जाति	14-05-1962	31-05-2022	पटना
12.	2553	शम्भुनाथ भट्टाचार्य	लेखापरीक्षक	सामान्य	06-06-1962	30-06-2022	प्रयागराज
13.	2310	एम कृष्णा	सहायक पर्यवेक्षक	अनुसूचित जाति	06-06-1962	30-06-2022	बैंगलौर
14.	1765	नरिन्द्र कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	20-06-1962	30-06-2022	सीएजी कार्यालय (प्रतिनियुक्ति)
15.	1696	सुनील कुमार	पर्यवेक्षक	सामान्य	24-06-1962	30-06-2022	मेरठ
16.	2398	राजिन्द्र कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	अनुसूचित जाति	26-06-1962	30-06-2022	जम्मू

क्रम सं.	एचओएस	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	श्रेणी	जन्मतिथि	सेवानिवृति तिथि	स्थान
17.	1847	एस. वरदराजन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	29-06-1962	30-06-2022	अवाडी
18.	2185	एस. मुरलीधरन	सहायक लेखापरीक्षक अधिकारी	सामान्य	09-07-1962	31-07-2022	चेन्नई
19	2575	रमेश कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	अनुसूचित जाति	11-07-1962	31-07-2022	देहरादून
20.	1742	डी. दामोदरन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	13-07-1962	31-07-2022	चेन्नई
21.	1777	नीलम रानी	निजी सचिव	सामान्य	13-07-1962	31-07-2022	नई दिल्ली
22.	1808	मोहम्मद फ़हीम कुरैशी	पर्यवेक्षक	अनुसूचित जाति	15-07-1962	31-07-2022	अम्बाझरी
23.	1835	एस. डी. शिन्दे	पर्यवेक्षक	सामान्य	16-07-1962	31-07-2022	पुणे
24.	1761	लखनलाल	पर्यवेक्षक	अनुसूचित जाति	20-07-1962	31-07-2022	नई दिल्ली
25.	1778	विरेन्द्र कुमार गौड़	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	31-07-1962	31-07-2022	नई दिल्ली
26.	1652	लखमी सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	अनुसूचित जाति	31-07-1962	31-07-2022	नई दिल्ली
27.	2443	संदीप भीकाजी मेजरी	एमटीएस	सामान्य	02-08-1962	31-08-2022	मुम्बई
28.	1919	जयप्रकाश वर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	05-08-1962	31-08-2022	प्रयागराज
29.	1925	जतिन्द्र पाल	सहायक पर्यवेक्षक	सामान्य	11-08-1962	31-08-2022	चण्डीगढ
30.	2536	सी. एस. जटेकर	एमटीएस	सामान्य	13-08-1962	31-08-2022	मुम्बई
31.	2620	जगदीश प्रसाद	एमटीएस	अनुसूचित जनजाति	16-08-1962	31-08-2022	जबलपुर
32.	1868	सुब्रत रॉय	पर्यवेक्षक	सामान्य	21-08-1962	31-08-2022	कलकत्ता

क्रम सं.	एचओएस	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	श्रेणी	जन्मतिथि	सेवानिवृति तिथि	स्थान
33.	1896	एम. सूर्य सुब्रमण्यम	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	28-08-1962	31-08-2022	विशाखापत्तनम
34.	2267	नारायणदत्त जोशी	सहायक पर्यवेक्षक	सामान्य	15-09-1962	30-09-2022	कानपुर
35.	1914	राजेश सक्सेना	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	21-10-1962	31-10-2022	सीएजी कार्यालय (प्रतिनियुक्ति)
36.	1796	कुमारकृष्णसेन गुप्ता	निजी सचिव	सामान्य	01-11-1962	31-10-2022	कलकत्ता
37.	1831	रमेश चन्द्र	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	10-11-1962	30-11-2022	चण्डीगढ़
38.	1798	राजीव शर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	17-11-1962	30-11-2022	जम्मू
39.	2156	नीतीश सिन्हा	सहायक पर्यवेक्षक	अनुसूचित जाति	01-12-1962	30-11-2022	कलकत्ता
40.	1825	एस के सिन्हा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	10-12-1962	31-12-2022	पटना
41.	1830	महेन्द्र कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	अन्य पिछड़ा वर्ग	17-12-1962	31-12-2022	चण्डीगढ़
42.	2516	सुधीर कुमार मंडल	सहायक पर्यवेक्षक	अनुसूचित जाति	20-12-1962	31-12-2022	कलकत्ता
43.	1720	विजय पांडूरंगजी गोखले	पर्यवेक्षक	सामान्य	31-12-1962	31-12-2022	अम्बाझरी
44.	1740	योगेन्द्र कुमार	पर्यवेक्षक	अनुसूचित जाति	02-01-1961	31-01-2021	प्रयागराज
45.	1750	हरिंद्र सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	03-01-1961	31-01-2021	चण्डीगढ
46.	1679	मुकुल दास	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	04-01-1961	31-01-2021	कलकत्ता
47.	2188	श्याम नंदन पाल	सहायक पर्यवेक्षक	सामान्य	06-01-1961	31-01-2021	चण्डीगढ

क्रम सं.	एचओएस	नाम	पदनाम	श्रेणी	जन्मतिथि	सेवानिवृति की तिथि	स्थान
48.	2417	पी मुरली	एमटीएस	सामान्य	10-01-1961	31-01-2021	चेन्नई
49.	2541	महादेव हलधर	सहायक पर्यवेक्षक	अनुसूचित जाति	14-01-1961	31-01-2021	कलकत्ता
50.	1692	पी के अग्रवाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	28-02-1961	28-02-2021	मेरठ
51.	1820	दिनेश कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	अनुसूचित जाति	15-03-1961	31-03-2021	मेरठ
52.	2627	कृष्ण स्वरूप	पर्यवेक्षक	सामान्य	14-04-1961	30-04-2021	चण्डीगढ़
53.	2296	आर केशावलु	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	अनुसूचित जाति	20-05-1961	31-05-2021	अवाडी
54.	2617	लीला सिंह	एमटीएस	सामान्य	10-06-1961	30-06-2021	मेरठ
55.	2512	कमल कांत गुप्ता	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	सामान्य	02-06-1961	30-06-2021	चण्डीगढ़
56.	1622	एस. एन. त्रिपाठी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	10-06-1961	30-06-2021	दिल्ली कैंट
57.	1757	डी. एन. राव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	01-07-1961	30-06-2021	अम्बाझरी
58.	1937	सी. आर. कुमार	पर्यवेक्षक	सामान्य	08-08-1961	31-08-2021	पटना
59.	1556	आर. पी. एस. राणा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	05-09-1961	30-09-2021	नई दिल्ली
60.	1850	बिलचेन भट्टा-चार्य	पर्यवेक्षक	अनुसूचित जनजाति	06-09-1961	30-09-2021	बैंगलोर
61.	1781	आर सी मैथ्यूज़	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	06-09-1961	30-09-2021	पुणे
62.	1826	ओमपाल सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	अनुसूचित जाति	01-10-1961	30-09-2021	मेरठ
63.	1716	पुष्कल रामाकृष्णन	निजी सचिव	सामान्य	02-11-1961	30-11-2021	सीएजी कार्या-लय (प्रतिनि-युक्ति)
64.	2518	कुलदीप सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	सामान्य	16-11-1961	30-11-2021	नई दिल्ली
65.	1685	आर टी गायक-वाड़	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	20-11-1961	30-11-2021	पुणे
66.	2628	परमजीत सिंह	एमटीएस	अनुसूचित जाति	30-11-1961	30-11-2021	देहरादून
67.	1785	वाई जी जोशी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य	13-12-1961	31-12-2021	पुणे
68.	2635	ईमानबल अलिहास	लेखापरीक्षक	सामान्य	24-12-1961	31-12-2021	जबलपुर

क्रम सं.	एचओएस	नाम	पदनाम	श्रेणी	जन्मतिथि	सेवानिवृति की तिथि	स्थान
69.	2513	सोमित्र बंदोपा-ध्याय	सहायक पर्यवेक्षक	सामान्य	26-12-1961	31-12-2021	कलकत्ता
70.	1634	मोहिंदर कुमार शर्मा	वरिष्ठ निजी सचिव	सामान्य	29-12-1961	31-12-2021	सीएजी कार्या-लय (प्रतिनि-युक्ति)
71.	2394	दिलीप माधवराव शिंदे	एमटीएस	सामान्य	30-12-1961	31-12-2021	किरकी

स्वैच्छिक सेवानिवृत्त कर्मचारियों की सूची

क्रम सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	स्थान	तिथि
1.	अरूणव दास	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	महानिदेशक आयुधनिर्माणी (कल-कत्ता)	01.03.2021
2.	सुशील बाला	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	चण्डीगढ़	15.07.2021
3.	एस कुमारन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	अवाड़ी	01.11.2021
4.	केदार गोपीनाथ खांडके	पर्यवेक्षक	खडकी	28.02
5.	एलविना एस जेकब	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	पुणे	02.05.2022

सेवाकाल के दौरान मृत कर्मचारियों की सूची

1.	एम बी भूमैया	लिपिक/टंकक	बैंगलोर	03.01.2021
2.	विवेक कुमार	डीईओ ए	नई दिल्ली	23.04.2021
3.	विनोद कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा	दिल्ली कैंट	03.05.2021
4.	अरविंद कुमार	सहायक लेखापरीक्षक अधिकारी	पटना	27.04.2021
5.	अभिजीत सूत्रधार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कलकत्ता	10.09.2021
6.	गजेन्द्र नाथ	एमटीएस	देहरादून	03.10.2021
7.	अनिल कुमार	एमटीएस	देहरादून	21.01.2022
8.	विनोद कुमार श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	प्रयागराज	20.01.2022
9.	सुंदर लाल कारी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	जबलपुर	05.05.2022

राजभाषा से संबंधित महत्वपूर्ण कथन

☞ ''जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता'' **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

☞ ''हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है'' **राहुल सांकृत्यायन**

☞ ''हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है'' **सुमित्रानंदन पंत**

☞ ''यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है'' **लोकमान्य बालगंगाधर तिलक**

☞ ''हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी'' **सी. राजगोपालाचारी**

☞ ''प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती'' **सुभाषचंद्र बोस**

☞ ''मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ, पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता'' **आचार्य विनोबा भावे**

☞ ''हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है'' **मैथिलीशरण गुप्त**

☞ ''जब तक इस देश का राजकाज अपनी भाषा (हिन्दी) में नहीं चलता तब तक हम यह नहीं कह सकते कि इस देश में स्वराज्य है'' **मोरारजी देसाई**

☞ ''हिन्दी साहित्य की नकल पर कोई साहित्य तैयार नहीं होता'' **सूर्यकांत त्रिपाठी निराला**

प्रकाशकः

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा रक्षा सेवाएं,

अफ्रीका एवेन्यू, सरोजिनी नगर, दिल्ली–110023